Prayer book for daily rituals

shradha saburi

om sai ram

OM SAI RAM

SHIRDI SAI BABA MANDIR

5706 127 Street SW, Edmonton AB T6Y 0A8

780-263-0663

www.shirdisaibabaedmonton.ca

contact@shirdisaibabaedmonton.ca

FB - Sai Baba Edmonton Canada | App - Sai Baba Edmonton

© Shirdi Sai Baba Mandir, Edmonton Alberta Canada

Prayer schedule

1. Kakkad Aarti on regular days
   - On Thursdays and Sundays morning

     Kakkad Aarti

     Abhishekam

     Sai Aarti
2. Madhyanh Aarti
3. Everyday evening rituals and Dhoop Aarti
   - Om Chanting – 3 times
   - Shri Ganesha mantra
   - Sai Mahamantra
   - Sai Gayatri
   - Sai 108 naam chanting
   - Sai 11 vachan
   - Sai Chalisa/Sai Amritvani/Sai Gayatri/Bhajans
   - Sai pad (both)
   - Naivedyam (Bhog) Aarti
   - Dhoop Aarti
4. Shej Aaarti
5. Sai Chalisa
6. Sai Amritvani

Om……Om……Om…….

Shri Ganesha Mantra

श्री वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटी समप्रभा निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व-कार्येशु सर्वदा॥

Shree Vakratunda Mahakaya Suryakoti Samaprabha
Nirvighnam Kuru Me Deva Sarva-Kaaryeshu Sarvada॥

Sai Mahamantra/ श्री साई महामंत्र (साई गायत्री मंत्र)

ॐ शिरडी वासाय विधमहे सच्चिदानन्दाय धीमही……

तन्नो साईं प्रचोदयात..॥

OM Shirdi Vasaya Vidamahe Sachidananda Dhimahi……

tanno Sai Prachodayath…

Shree Sai Baba Jaikara/श्री साई बाबा जयकारा

॥ अनंत कोटी ब्रम्हांडनायक राजाधिराज योगीराज परं ब्रम्हं

श्री सच्चिदानंद सदगुरु श्री साईनाथ महाराज की जय ॥

II Ananta Koti Brahmand Nayak Rajadhiraj Yogiraj Parabrahma Shree Sadchidanand Sadguru Sainath Maharaj Ki Jay II

श्री साईबाबा – अष्टोत्तरशतनामावली

१. ॐ श्री साईनाथाय नमः
२. ॐ लक्ष्मीनारायणाय नमः
३. ॐ कृष्णरामशिवमारूत्यादिरूपाय नमः
४. ॐ शेषशायिने नमः
५. ॐ गोदावरीतटशीलधीवासिने नमः
६. ॐ भक्तहृदालयाय नमः
७. ॐ सर्वह्रन्निलयाय नमः
८. ॐ भूतावासाय नमः
९. ॐ भूतभविष्यभाववर्जिताय नमः
१०. ॐ कालातीताय नमः
११. ॐ कालाय नमः
१२. ॐ कालकालाय नमः
१३. ॐ कालदर्पदमनाय नमः
१४. ॐ मृत्युञ्जयाय नमः
१५. ॐ अमर्त्याय नमः
१६. ॐ मर्त्याभयप्रदाय नमः
१७. ॐ जीवाधाराय नमः
१८. ॐ सर्वधाराय नमः
१९. ॐ भक्तावनसमर्थाय नमः
२०. ॐ भक्तावनप्रतिज्ञाय नमः
२१. ॐ अन्नवस्त्रदाय नमः
२२. ॐ आरोग्यक्षेमदाय नमः
२३. ॐ धनमाङ्गल्यप्रदाय नमः
२४. ॐ ऋद्धिसिद्धिदाय नमः
२५. ॐ पुत्रमित्रकलत्रबन्धुदाय नमः
२६. ॐ योगक्षेमवहाय नमः
२७. ॐ आपद्बान्धवाय नमः
२८. ॐ मार्गबन्धवे नमः
२९. ॐ भक्तिमुक्तिस्वर्गापवर्गदाय नमः
३०. ॐ प्रियाय नमः
३१. ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः
३२. ॐ अन्तर्यामिणे नमः
३३. ॐ सच्चिदात्मने नमः
३४. ॐ नित्यानंदाय नमः
३५. ॐ परमसुखदाय नमः
३६. ॐ परमेश्वराय नमः
३७. ॐ परब्रह्मणे नमः
३८. ॐ परमात्मने नमः
३९. ॐ ज्ञानस्वरूपिणे नमः
४०. ॐ जगतःपित्रे नमः
४१. ॐ भक्तांनां मातृधातृपितामहाय नमः
४२. ॐ भक्ताभयप्रदाय नमः
४३. ॐ भक्तपराधीनाय नमः
४४. ॐ भक्तानुग्रहकातराय नमः
४५. ॐ शराणागतवत्सलाय नमः
४६. ॐ भक्तिशक्तिप्रदाय नमः
४७. ॐ ज्ञानवैराग्यदाय नमः
४८. ॐ प्रेमप्रदाय नमः
४९. ॐ संशयहृदयदौर्बल्यपापकर्मवासनाक्षयकराय नमः
५०. ॐ हृदयग्रन्थिभेदकाय नमः
५१. ॐ कर्मध्वंसिने नमः
५२. ॐ शुद्धसत्वस्थिताय नमः
५३. ॐ गुणातीतगुणात्मने नमः
५४. ॐ अनन्तकल्याणगुणाय नमः

५५. ॐ अमितपराक्रमाय नमः

५६. ॐ जयिने नमः

५७. ॐ दुर्घर्षाक्षोभ्याय नमः

५८. ॐ अपराजिताय नमः

५९. ॐ त्रिलोकेषु अविघातगतये नमः

६०. ॐ अशक्यरहिताय नमः

६१. ॐ सर्वशक्तिमूर्तये नमः

६२. ॐ सुरूपसुन्दराय नमः

६३. ॐ सुलोचनाय नमः

६४. ॐ बहुरूपविश्वमूर्तये नमः

६५. ॐ अरूपाव्यक्ताय नमः

६६. ॐ अचिन्त्याय नमः

६७. ॐ सूक्ष्माय नमः

६८. ॐ सर्वान्तर्यामिणे नमः

६९. ॐ मनोवागतीताय नमः

७०. ॐ प्रेममूर्तये नमः

७१. ॐ सुलभदुर्लभाय नमः

७२. ॐ असहायसहायाय नमः

७३. ॐ अनाथनाथदीनबन्धवे नमः

७४. ॐ सर्वभारभृते नमः

७५. ॐ अकर्मानेककर्मसुकर्मिणे नमः

७६. ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः

७७. ॐ तीर्थाय नमः

७८. ॐ वासुदेवाय नमः

७९. ॐ संता गतये नमः

८०. ॐ सत्परायणाय नमः

८१. ॐ लोकनाथाय नमः

८२. ॐ पावनानघाय नमः

८३. ॐ अमृतांशवे नमः

८४. ॐ भास्करप्रभाय नमः

८५. ॐ ब्रह्मचर्यतपश्चर्यादिसुव्रताय नमः

८६. ॐ सत्यधर्मपरायणाय नमः

८७. ॐ सिद्धेश्वराय नमः

८८. ॐ सिद्धसङ्कल्पाय नमः

८९. ॐ योगेश्वराय नमः

९०. ॐ भगवते नमः

९१. ॐ भक्तवत्सलाय नमः

९२. ॐ सत्पुरूषाय नमः

९३. ॐ पुरूषोत्तमाय नमः

९४. ॐ सत्यतत्त्वबोधकाय नमः

९५. ॐ कामदिषडवैरिध्वंसिने नमः

९६. ॐ अभेदानन्दानुभवप्रदाय नमः

९७. ॐ समसर्वमतसंमताय नमः

९८. ॐ श्री दक्षिणामुर्तये नमः

९९. ॐ श्री वेङ्कटेशरमणाय नमः

१००. ॐ अभ्दुतानन्दचर्याय नमः

१०१. ॐ प्रपन्नार्तिहराय नमः

१०२. ॐ संसारसर्वदुःखक्षयकराय नमः

१०३. ॐ सर्ववित् सर्वतोमुखाय नमः

१०४. ॐ सर्वान्तर्बहिःस्थिताय नमः

१०५. ॐ सर्वमङ्गलकराय नमः

१०६. ॐ सर्वाभीष्टप्रदाय नमः

१०७. ॐ समरससन्मार्गस्थापनाय नमः

१०८. ॐ श्री समर्थसद्गुरूसाईनाथाय नम

Sai Baba Ke 11 Vachan

1. जो शिरडी आएगा, आपद दूर भगायेगा!

2. चढ़े समाधि की सीडी पर, पाव तले दुःख की पीडी पर!

3. त्याग शरीर चला जाऊँगा, भक्त हेतु भागा आऊँगा!

4. मन मे रखना पूरण विश्वास, करे समाधि पूरी आस!

5. मुझे सदा जीवित ही जानो, अनुभव करो सत्य पहचानो!

6. मेरी शरण आ खाली जाये, होतो कोई मुझे बताये!

7. जैसा भाव रहा जिस जन का, वैसा रूप रहा मेरे मन का!

8. भार तुम्हारा मुझ पर होगा, वचन न मेरा झूठा होगा!

9. आ सहायता ले भरपूर, जो माँगा वह नही है दूर!

10. मुझमें लीन वचन मन काया, उसका ऋण न कभी चुकाया!

11. धन्य-धन्य वे भक्त अनन्य, मेरी शरण तज जिसे न अन्य!

श्री सच्चिदानंद सदगुरु श्री साईनाथ महाराज की जय

॥श्री साई चालीसा॥

पहले साई के चरणों में, अपना शीश नमाऊं मैं।
कैसे शिरडी साई आए, सारा हाल सुनाऊं मैं॥1॥

कौन है माता, पिता कौन है, ये न किसी ने भी जाना।
कहां जन्म साई ने धारा, प्रश्न पहेली रहा बना॥2॥

कोई कहे अयोध्या के, ये रामचंद्र भगवान हैं।
कोई कहता साई बाबा, पवन पुत्र हनुमान हैं॥3॥

कोई कहता मंगल मूर्ति, श्री गजानंद हैं साई।
कोई कहता गोकुल मोहन, देवकी नन्दन हैं साई॥4॥

शंकर समझे भक्त कई तो, बाबा को भजते रहते।
कोई कह अवतार दत्त का, पूजा साई की करते॥5॥

कुछ भी मानो उनको तुम, पर साई हैं सच्चे भगवान।
बड़े दयालु दीनबंधु, कितनों को दिया जीवन दान॥6॥

कई वर्ष पहले की घटना, तुम्हें सुनाऊंगा मैं बात।
किसी भाग्यशाली की, शिरडी में आई थी बारात॥7॥

आया साथ उसी के था, बालक एक बहुत सुन्दर।
आया, आकर वहीं बस गया, पावन शिरडी किया नगर॥8॥

कई दिनों तक भटकता, भिक्षा माँग उसने दर-दर।
और दिखाई ऐसी लीला, जग में जो हो गई अमर॥9॥

जैसे-जैसे अमर उमर बढ़ी, बढ़ती ही वैसे गई शान।
घर-घर होने लगा नगर में, साई बाबा का गुणगान॥10॥

दिग् दिगंत में लगा गूंजने, फिर तो साई जी का नाम।
दीन-दुखी की रक्षा करना, यही रहा बाबा का काम॥11॥

बाबा के चरणों में जाकर, जो कहता मैं हूं निरधन।
दया उसी पर होती उनकी, खुल जाते दुःख के बंधन॥12॥

कभी किसी ने मांगी भिक्षा, दो बाबा मुझको संतान।
एवं अस्तु तब कहकर साई, देते थे उसको वरदान॥13॥

स्वयं दुःखी बाबा हो जाते, दीन-दुःखी जन का लख हाल।
अन्तःकरण श्री साई का, सागर जैसा रहा विशाल॥14॥

भक्त एक मद्रासी आया, घर का बहुत ब़ड़ा धनवान।
माल खजाना बेहद उसका, केवल नहीं रही संतान॥15॥

लगा मनाने साईनाथ को, बाबा मुझ पर दया करो।
झंझा से झंकृत नैया को, तुम्हीं मेरी पार करो॥16॥

कुलदीपक के बिना अंधेरा, छाया हुआ घर में मेरे।
इसलिए आया हँूबाबा, होकर शरणागत तेरे॥17॥

कुलदीपक के अभाव में, व्यर्थ है दौलत की माया।
आज भिखारी बनकर बाबा, शरण तुम्हारी मैं आया॥18॥

दे-दो मुझको पुत्र-दान, मैं ऋणी रहूंगा जीवन भर।
और किसी की आशा न मुझको, सिर्फ भरोसा है तुम पर॥19॥

अनुनय-विनय बहुत की उसने, चरणों में धर के शीश।
तब प्रसन्न होकर बाबा ने , दिया भक्त को यह आशीश॥20॥

`अल्ला भला करेगा तेरा´ पुत्र जन्म हो तेरे घर।
कृपा रहेगी तुझ पर उसकी, और तेरे उस बालक पर॥21॥

अब तक नहीं किसी ने पाया, साई की कृपा का पार।
पुत्र रत्न दे मद्रासी को, धन्य किया उसका संसार॥22॥

तन-मन से जो भजे उसी का, जग में होता है उद्धार।
सांच को आंच नहीं हैं कोई, सदा झूठ की होती हार॥23॥

मैं हूं सदा सहारे उसके, सदा रहूँगा उसका दास।
साई जैसा प्रभु मिला है, इतनी ही कम है क्या आस॥24॥

मेरा भी दिन था एक ऐसा, मिलती नहीं मुझे रोटी।
तन पर कप़ड़ा दूर रहा था, शेष रही नन्हीं सी लंगोटी॥25॥

सरिता सन्मुख होने पर भी, मैं प्यासा का प्यासा था।
दुर्दिन मेरा मेरे ऊपर, दावाग्नी बरसाता था॥26॥

धरती के अतिरिक्त जगत में, मेरा कुछ अवलम्ब न था।
बना भिखारी मैं दुनिया में, दर-दर ठोकर खाता था॥27॥

ऐसे में एक मित्र मिला जो, परम भक्त साई का था।
जंजालों से मुक्त मगर, जगती में वह भी मुझसा था॥28॥

बाबा के दर्शन की खातिर, मिल दोनों ने किया विचार।
साई जैसे दया मूर्ति के, दर्शन को हो गए तैयार॥29॥

पावन शिरडी नगर में जाकर, देख मतवाली मूरति।
धन्य जन्म हो गया कि हमने, जब देखी साई की सूरति॥30॥

जब से किए हैं दर्शन हमने, दुःख सारा काफूर हो गया।
संकट सारे मिटै और, विपदाओं का अन्त हो गया॥31॥

मान और सम्मान मिला, भिक्षा में हमको बाबा से।
प्रतिबिम्बित हो उठे जगत में, हम साई की आभा से॥32॥

बाबा ने सन्मान दिया है, मान दिया इस जीवन में।
इसका ही संबल ले मैं, हंसता जाऊंगा जीवन में॥33॥

साई की लीला का मेरे, मन पर ऐसा असर हुआ।
लगता जगती के कण-कण में, जैसे हो वह भरा हुआ॥34॥

`काशीराम´ बाबा का भक्त, शिरडी में रहता था।
मैं साई का साई मेरा, वह दुनिया से कहता था॥35॥

सीकर स्वयं वस्त्र बेचता, ग्राम-नगर बाजारों में।
झंकृत उसकी हृदय तंत्री थी, साई की झंकारों में॥36॥

स्तब्ध निशा थी, थे सोए रजनी आंचल में चाँद सितारे।
नहीं सूझता रहा हाथ को हाथ तिमिर के मारे॥37॥

वस्त्र बेचकर लौट रहा था, हाय ! हाट से काशी।
विचित्र बड़ा संयोग कि उस दिन, आता था एकाकी॥38॥

घेर राह में ख़ड़े हो गए, उसे कुटिल अन्यायी।
मारो काटो लूटो इसकी ही, ध्वनि पड़ी सुनाई॥39॥

लूट पीटकर उसे वहाँ से कुटिल गए चम्पत हो।
आघातों में मर्माहत हो, उसने दी संज्ञा खो॥40॥

बहुत देर तक पड़ा रह वह, वहीं उसी हालत में।
जाने कब कुछ होश हो उठा, वहीं उसकी पलक में॥41॥

अनजाने ही उसके मुंह से, निकल पड़ा था साई।
जिसकी प्रतिध्वनि शिरडी में, बाबा को पड़ी सुनाई॥42॥

क्षुब्ध हो उठा मानस उनका, बाबा गए विकल हो।
लगता जैसे घटना सारी, घटी उन्हीं के सन्मुख हो॥43॥

उन्मादी से इधर-उधर तब, बाबा लेगे भटकने।
सन्मुख चीजें जो भी आई, उनको लगने पटकने॥44॥

और धधकते अंगारों में, बाबा ने अपना कर डाला।
हुए सशंकित सभी वहाँ, लख ताण्डवनृत्य निराला॥45॥

समझ गए सब लोग, कि कोई भक्त पड़ा संकट में।
क्षुभित ख़ड़े थे सभी वहाँ, पर पड़े हुए विस्मय में॥46॥

उसे बचाने की ही खातिर, बाबा आज विकल है।
उसकी ही पीड़ा से पीडित, उनकी अन्तःस्थल है॥47॥

इतने में ही विविध ने अपनी, विचित्रता दिखलाई।
लख कर जिसको जनता की, श्रद्धा सरिता लहराई॥48॥

लेकर संज्ञाहीन भक्त को, गाड़ी एक वहाँ आई।
सन्मुख अपने देख भक्त को, साई की आंखें भर आई॥49॥

शांत, धीर, गंभीर, सिन्धु सा, बाबा का अन्तःस्थल।
आज न जाने क्यों रह-रहकर, हो जाता था चंचल॥50॥

आज दया की मू स्वयं था, बना हुआ उपचारी।
और भक्त के लिए आज था, देव बना प्रतिहारी॥51॥

आज भिक्त की विषम परीक्षा में, सफल हुआ था काशी।
उसके ही दर्शन की खातिर थे, उमड़े नगर-निवासी।52॥

जब भी और जहां भी कोई, भक्त पड़े संकट में।
उसकी रक्षा करने बाबा, आते हैं पलभर में॥53॥

युग-युग का है सत्य यह, नहीं कोई नई कहानी।
आपतग्रस्त भक्त जब होता, जाते खुद अन्तयामी॥54॥

भेदभाव से परे पुजारी, मानवता के थे साई।
जितने प्यारे हिन्दू-मुस्लिम, उतने ही थे सिक्ख ईसाई॥55॥

भेद-भाव मंदिर-मिस्जद का, तोड़-फोड़ बाबा ने डाला।
राह रहीम सभी उनके थे, कृष्ण करीम अल्लाताला॥56॥

घण्टे की प्रतिध्वनि से गूंजा, मिस्जद का कोना-कोना।
मिले परस्पर हिन्दू-मुस्लिम, प्यार बढ़ा दिन-दिन दूना॥57॥

चमत्कार था कितना सुन्दर, परिचय इस काया ने दी।
और नीम कडुवाहट में भी, मिठास बाबा ने भर दी॥58॥

सब को स्नेह दिया साई ने, सबको संतुल प्यार किया।
जो कुछ जिसने भी चाहा, बाबा ने उसको वही दिया॥59॥

ऐसे स्नेहशील भाजन का, नाम सदा जो जपा करे।
पर्वत जैसा दुःख न क्यों हो, पलभर में वह दूर टरे॥60॥

साई जैसा दाता हमने, अरे नहीं देखा कोई।
जिसके केवल दर्शन से ही, सारी विपदा दूर गई॥61॥

तन में साई, मन में साई, साई-साई भजा करो।
अपने तन की सुधि-बुधि खोकर, सुधि उसकी तुम किया करो॥62॥

जब तू अपनी सुधि तज, बाबा की सुधि किया करेगा।
और रात-दिन बाबा-बाबा, ही तू रटा करेगा॥63॥

तो बाबा को अरे ! विवश हो, सुधि तेरी लेनी ही होगी।
तेरी हर इच्छा बाबा को पूरी ही करनी होगी॥64॥

जंगल, जगंल भटक न पागल, और ढूंढ़ने बाबा को।
एक जगह केवल शिरडी में, तू पाएगा बाबा को॥65॥

धन्य जगत में प्राणी है वह, जिसने बाबा को पाया।
दुःख में, सुख में प्रहर आठ हो, साई का ही गुण गाया॥66॥

गिरे संकटों के पर्वत, चाहे बिजली ही टूट पड़े।
साई का ले नाम सदा तुम, सन्मुख सब के रहो अड़े॥67॥

इस बूढ़े की सुन करामत, तुम हो जाओगे हैरान।
दंग रह गए सुनकर जिसको, जाने कितने चतुर सुजान॥68॥

एक बार शिरडी में साधु, ढ़ोंगी था कोई आया।
भोली-भाली नगर-निवासी, जनता को था भरमाया॥69॥

जड़ी-बूटियां उन्हें दिखाकर, करने लगा वह भाषण।
कहने लगा सुनो श्रोतागण, घर मेरा है वृन्दावन॥70॥

औषधि मेरे पास एक है, और अजब इसमें शिक्त।
इसके सेवन करने से ही, हो जाती दुःख से मुिक्त॥71॥

अगर मुक्त होना चाहो, तुम संकट से बीमारी से।
तो है मेरा नम्र निवेदन, हर नर से, हर नारी से॥72॥

लो खरीद तुम इसको, इसकी सेवन विधियां हैं न्यारी।
यद्यपि तुच्छ वस्तु है यह, गुण उसके हैं अति भारी॥73॥

जो है संतति हीन यहां यदि, मेरी औषधि को खाए।
पुत्र-रत्न हो प्राप्त, अरे वह मुंह मांगा फल पाए॥74॥

औषधि मेरी जो न खरीदे, जीवन भर पछताएगा।
मुझ जैसा प्राणी शायद ही, अरे यहां आ पाएगा॥75॥

दुनिया दो दिनों का मेला है, मौज शौक तुम भी कर लो।
अगर इससे मिलता है, सब कुछ, तुम भी इसको ले लो॥76॥

हैरानी बढ़ती जनता की, लख इसकी कारस्तानी।
प्रमुदित वह भी मन- ही-मन था, लख लोगों की नादानी॥77॥

खबर सुनाने बाबा को यह, गया दौड़कर सेवक एक।
सुनकर भृकुटी तनी और, विस्मरण हो गया सभी विवेक॥78॥

हुक्म दिया सेवक को, सत्वर पकड़ दुष्ट को लाओ।
या शिरडी की सीमा से, कपटी को दूर भगाओ॥79॥

मेरे रहते भोली-भाली, शिरडी की जनता को।
कौन नीच ऐसा जो, साहस करता है छलने को॥80॥

पलभर में ऐसे ढोंगी, कपटी नीच लुटेरे को।
महानाश के महागर्त में पहुँचा, दूँ जीवन भर को॥81॥

तनिक मिला आभास मदारी, क्रूर, कुटिल अन्यायी को।
काल नाचता है अब सिर पर, गुस्सा आया साई को॥82॥

पलभर में सब खेल बंद कर, भागा सिर पर रखकर पैर।
सोच रहा था मन ही मन, भगवान नहीं है अब खैर॥83॥

सच है साई जैसा दानी, मिल न सकेगा जग में।
अंश ईश का साई बाबा, उन्हें न कुछ भी मुश्किल जग में॥84॥

स्नेह, शील, सौजन्य आदि का, आभूषण धारण कर।
बढ़ता इस दुनिया में जो भी, मानव सेवा के पथ पर॥85॥

वही जीत लेता है जगती के, जन जन का अन्तःस्थल।
उसकी एक उदासी ही, जग को कर देती है वि£ल॥86॥

जब-जब जग में भार पाप का, बढ़-बढ़ ही जाता है।
उसे मिटाने की ही खातिर, अवतारी ही आता है॥87॥

पाप और अन्याय सभी कुछ, इस जगती का हर के।
दूर भगा देता दुनिया के, दानव को क्षण भर के॥88॥

स्नेह सुधा की धार बरसने, लगती है दुनिया में,
गले परस्पर मिलने लगते, जान जान है आपस में॥89॥

ऐसे ही अवतारी साई, मृत्युलोक में आकर।
समता का यह पाठ पढ़ाया, सबको अपना आप मिटाकर ॥90॥

नाम द्वारका मिस्जद का, रखा शिरडी में साई ने।
दाप, ताप, संताप मिटाया, जो कुछ आया साई ने॥91॥

सदा याद में मस्त राम की, बैठे रहते थे साई।
पहर आठ ही राम नाम को, भजते रहते थे साई॥92॥

सूखी-रूखी ताजी बासी, चाहे या होवे पकवान।
सौदा प्यार के भूखे साई की, खातिर थे सभी समान॥93॥

स्नेह और श्रद्धा से अपनी, जन जो कुछ दे जाते थे।
बड़े चाव से उस भोजन को, बाबा पावन करते थे॥94॥

कभी-कभी मन बहलाने को, बाबा बाग में जाते थे।
प्रमुदित मन में निरख प्रकृति, छटा को वे होते थे॥95॥

रंग-बिरंगे पुष्प बाग के, मंद-मंद हिल-डुल करके।
बीहड़ वीराने मन में भी स्नेह सलिल भर जाते थे॥96॥

ऐसी समुधुर बेला में भी, दुख आपात, विपदा के मारे।
अपने मन की व्यथा सुनाने, जन रहते बाबा को घेरे॥97॥

सुनकर जिनकी करूणकथा को, नयन कमल भर आते थे।
दे विभूति हर व्यथा, शांति, उनके उर में भर देते थे॥98॥

जाने क्या अद्भुत शिक्त, उस विभूति में होती थी।
जो धारण करते मस्तक पर, दुःख सारा हर लेती थी॥99॥

धन्य मनुज वे साक्षात् दर्शन, जो बाबा साई के पाए।
धन्य कमल कर उनके जिनसे, चरण-कमल वे परसाए॥100॥

काश निर्भय तुमको भी, साक्षात् साई मिल जाता।
वर्षों से उजड़ा चमन अपना, फिर से आज खिल जाता॥101॥

गर पकड़ता मैं चरण श्री के, नहीं छोड़ता उम्रभर॥
मना लेता मैं जरूर उनको, गर रूठते साई मुझ पर॥102॥

श्री साई अमृत वाणी

श्री सच्चिदानन्द सद्गुरु
साई नाथ महाराज की जय
ॐ साई श्री साई जय जय साई
साई कृपा अवतरण

साई नाम ज्योति कलश, हे जग का आधार ।
चिन्तन ज्योति पुंज का, करिए बारम्बार ॥ १ ॥
सोते जगते साई कह, आते जाते नाम ।
मन ही मन से साई को, शत शत करें प्रणाम ॥ २ ॥
सुखदा हे शुभा कृपा, शक्ति शांति स्वरुप ।
है सत्य आनन्द मयी, साई कृपा अनूप ॥ ३ ॥
देव दनुज नर नाग पशु, पक्षी कीट पतंग ।
सब में साई समान है, साई सभी के संग ॥ ४ ॥
साई नाम वह नाव है, उस पर हो असवार ।
भले ही दुस्तर है बड़ा, करता भवसागर पार ॥ ५ ॥
मंत्रमय ही मानिये, साई राम भगवान ।
देवालय है साई का, साई शब्द गुण खान ॥ ६ ॥
साई नाम आराधिए, भीतर भर ये भाव ।
देव दया अवतरण का, धार चौगुना चाव ॥ ७ ॥
साई शब्द को ध्याइये, मन्त्र तारक मान ।
स्वशक्ति सत्ता जग करे, उपरि चक्र को यान ॥ ८ ॥
जीवन विरथा बीत गया, किया न साधन एक ।
कृपा हो मेरे साई की, मिले ज्ञान विवेक ॥ ९ ॥
बाबा ने अति कृपा कीनी, मोहे दीयो समझाई ।
अहंकार को छोड़ो भाई, जो तुम चाहो भलाई ॥ १० ॥

वंदना

स्वीकार करो मेरी वंदना, शिरडी के करतार ।
साई तुझे परमात्मन्, मंगल शिव शुभकार ॥
हाथ जोड़कर है खड़ा, सेवक तेरे द्वार ।
करता निश दिन वन्दना, साई करो स्वीकार ॥
चरणों पर मस्तक किये, विनय भक्ति के साथ ।
नमस्कार मेरा तुझे, होवे जग के नाथ ॥
साई नाम जप वंन्दना, यही साधना योग ।
जग झूठा और जगत के, मिथ्या हैं सब भोग ॥
नमो नमो हे साई प्रभु, तुम हो जग के नाथ ।
सबके पालनहार तुम, चरण नवाऊँ माथ ॥
दोनों कर को जोड़ कर, मस्तक घुटने टेक ।
तुझ को हो प्रणाम मम, शत शत कोटि अनेक ॥
तन से सेवा साई की, मन से सुमिरण नाम ।
धन से धृति धारणा, कर्म करो निष्काम ॥
भक्ति भाव शुभ भावना, मन में भर भरपूर ।
श्रद्धा से तुझ को नमूं, मेरे साई हजूर ॥

श्री साई महिमा

श्री साई राम परम सत्य, प्रकाश रुप,
परम पावन शिरडी निवासी, परम ज्ञान आनन्द
स्वरुप, प्रज्ञा प्रदाता, सच्चिदानंद स्वरुप,
परम पुरुष योगीराज, दयालु देवाधिदेव हैं,
उनको बार बार, नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ।

श्री साई वाणी

नमो नमो पावन साई,
नमो नमो कृपाल गोसाई ।
साई अमृत पद पावन वाणी,
साई नाम धुन सुधा समानी ॥ १ ॥
नमो नमो सन्तन प्रतिपाला,
नमो नमो श्री साई दयाला ।
परम सत्य है परम विज्ञान,
ज्योति स्वरुप साई भगवान ॥ २ ॥
नमो नमो साई अविनाशी,
नमो नमो घट-घट के वासी ।
साई ध्वनि है नाम उच्चारण,
साई राम सुखसिद्धि कारण ॥ ३ ॥
नमो नमो श्री आत्म रामा,
नमो नमो प्रभु पूरन कामा ।
अमृत वाणी अमृत साई राम,
साई राम मुद् मंगल धाम ॥ ४ ॥
साई नाम मन्त्र जप जाप,
साई नाम मेटे त्रयी ताप ।
साईधुनि में लगे समाधि,
मिटे सब आधि व्याधि उपाधि ॥ ५ ॥
साई जाप है सरल समाधि,
हरे सब आधि व्याधि उपाधि ।
ऋद्धि सिद्धि और नव निधान,
दाता साई है सब सुख खान ॥ ६ ॥
साई साई श्री साई हरि,
मुक्ति वैराग्य का योग ।
साई साई श्री साई जप,
दाता अमृत भोग ॥ ७ ॥
जल थल वायु तेज आकाश,
साई से पावें सब प्रकाश ।
जल और पृथ्वी साई की माया,
अन्तहीन अन्तरिक्ष बनाया ॥ ८ ॥

नेति नेति कह वेद बखाने,
भेद साई का कोई न जाने ।
साई नाम है सब रस सार,
साई नाम जग तारण हार ॥ ९ ॥
साई नाम के भरो भण्डार,
साई नाम का सद्व्यवहार ।
इहां नाम की करो कमाई,
उंहा न होय कोई कठिनाई ॥ १० ॥
झोली साई नाम से भरिऐ,
संचित साई नाम धन करिए ।
जुड़े नाम का जब धन माल,
साई कृपा ले अन्त सम्भाल ॥ ११ ॥
साई साई पद शक्ति जगावे,
साई साई धुन जभी रमावे ।
साई नाम जब जगे अभंग,
चेतन भाव जगे सुख संग ॥ १२ ॥
भावना भक्ति भरे भजनीक,
भजते साई नाम रमणीक ।
भजते भक्त भाव भरपुर,
भ्रम भय भेदभाव से दूर ॥ १३ ॥
साई साई सुगुणी जन गाते,
स्वर संगीत से साई रिझाते ।
कीर्तन कथा करते विद्वान,
सार सरस संग साधनवान् ॥ १४ ॥
काम क्रोध और लोभ ये,
तीन पाप के मूल ।
नाम कुल्हाड़ी हाथ ले,
कर इनको निर्मूल ॥ १५ ॥
साई नाम है सब सुख खान,
अन्त करे सब का कल्याण ।
जीवन साई से प्रीति करना,
मरना मन से साई न बिसरना ॥ १६ ॥
साई भजन बिन जीवन जीना,
आठों पहर हलाहल पीना ।
भीतर साई का रूप समावे,
मस्तक पर प्रतिमा छा जावे ॥ १७ ॥
जब जब ध्यान साई का आवे,
रोम रोम पुल्कित हो जावे ।
साई कृपा सूरज का उगना,
हृदय साई पंकज खिलना ॥ १८ ॥
साई नाम मुक्ता मणि,
राखो सूत पिरोय ।
पाप ताप न रहे,
आत्म दर्शन होय ॥ १९ ॥
सत्य मूलक है रचना सारी,
सर्व सत्य प्रभु साई पसारी ।
बीज से तरु मकड़ी से तार,
हुआ त्यों साई जग से विस्तार ॥ २० ॥
साई का रुप हृदय में धारो,
अन्तरमन से साई पुकारो ।
अपने भगत की सुनकर टेर,
कभी न साई लगाते देर ॥ २१ ॥
धीर वीर मन रहित विकार,
तन से मन से कर उपकार ।
सदा ही साई नाम गुण गावे,
जीवन मुक्त अमर पद पावे ॥ २२ ॥
साई बिना सब नीरस स्वाद,
ज्यों हो स्वर बिना राग विषाद ।
साई बिना नहीं सजे सिंगार,
साई नाम है सब रस सार ॥ २३ ॥
साई पिता साई ही माता,
साई बन्धु साई ही भ्राता ।
साई जन जन के मन रंजन,
साई सब दुःख दर्द विभंजन ॥ २४ ॥
साई नाम दीपक बिना,
जन मन में अन्धेर ।
इसी लिये हे मम मन,
नाम सुमाला फेर ॥ २५ ॥
जपते साई नाम महा माला,
लगता नरक द्वार पै ताला ।
राखो साई पर इक विश्वास,
सब तज करो साई की आस ॥ २६ ॥
जब जब चढे साई का रंग,
मन में छाए प्रेम उमंग ।
जपते साई साई जप पाठ,
जलते कर्मबन्ध यथा काठ ॥ २७ ॥
साई नाम सुधा रस सागर,
साई नाम ज्ञान गुण आगर ।
साई जाप रवि तेज समान,
महा मोह तम हरे अज्ञान ॥ २८ ॥
साई नाम धुन अनहद नाद,
नाम जपे मन हो विस्माद ।
साई नाम मुक्ति का दाता,
ब्रह्मधाम वह खुद पहुँचाता ॥ २९ ॥
हाथ से करिए साई का कार,
पग से चलिए साई के द्वार
मुख से साई सुमिरण करिए,
चित सदा चिन्तन में धरिए ॥ ३० ॥
कानों से यश साई का सुनिए,
साई धाम का मार्ग चुनिए ।
साई नाम पद अमृतवाणी,
साई नाम धुन सुधा समानी ॥ ३१ ॥
आप जपो औरों को जपावो,
साई धुनि को मिलकर गावो ।
साई नाम का सुनकर गाना,
मन अलमस्त बने दिखाना ॥ ३२ ॥
पल पल उठे साई तरंग,
चढ़े नाम का गूढ़ा रंग ।
साई कृपा है उच्चतर योग,
साई कृपा है शुभ संयोग ॥ ३३ ॥
साई कृपा सब साधन मर्म,
साई कृपा संयम सत्य धर्म ।
साई नाम मन में बसाना,
सुपथ साई कृपा का पाना ॥ ३४ ॥
मन में साई धुन जब फिरे,
साई कृपा तब ही अवतरे ।
रहुं मैं साई में हो कर लीन,
जैसे जल में हो मीन अदीन ॥ ३५ ॥
साई नाम को सिमरिये,
साई साई एक तार ।
परम पाठ पावन परम,
करता भव से पार ॥ ३६ ॥
साई कृपा भरपूर मैं पाउं,
परम प्रभु को भीतर लाउं ।
साई ही साई साई कह मीत,
साई से कर ले सांची प्रीत ॥ ३७ ॥
साई ही साई का दर्शन करिए,
मन भीतर इक आनन्द भरिए ।
साई की जब मिल जाए भिक्षा,
फिर मन में कोई रहे न इच्छा ॥ ३८ ॥
जब जब मन का तार हिलेगा,
तब तब साई का प्यार मिलेगा ।
मिटेगी जग से आनी जानी,
जीवन मुक्त होय यह प्राणी ॥ ३९ ॥
शिरडी के हैं साई हरि,
तीन लोक के नाथ ।
बाबा हमारे पावन प्रभु,
सदा के संगी साथ ॥ ४० ॥
साई धुनि ज़ब पकड़े जोर,

खींचे साई प्रभु अपनी ओर ।
मंदिर मंदिर बस्ती बस्ती,
छा जाए साईनाम की मस्ती ॥ ४१ ॥
अमृतरुप साई गुण गान,
अमृत कथन साई व्याख्यान ।
अमृत वचन साई की चर्चा,
सुधा सम गीत साई की अर्चा ॥ ४२ ॥
शुभ रसना वही कहावे,
साई राम जहां नाम सुहावे ।
शुभ कर्म है नाम कमाई,
साई राम परम सुखदाई ॥ ४३ ॥
जब जी चाहे दर्शन पाईये,
जै जे कार साई की गाइये ।
साई नाम की धुनि लगाइये,
सहज की भवसागर तर जाईये ॥ ४४ ॥
बाबा को जो भजे निरन्तर,
हर दम ध्यान लगावे ।
बाबा में मिल जाये अन्त में,
जनम सफेल हेा जाव ॥ ४५ ॥
धन्य धन्य श्री साई उजागर,
धन्य धन्य करुणा के सागर ।
साई नाम मुद मंगलकारी,
विघ्न हरे सब पातक हारी ॥ ४६ ॥
धन्य धन्य श्री साई हमारे,
धन्य धन्य भक्तन रखवारे ।
साई नाम शुभ शकुन महान्,
स्वस्ति शान्ति शिवकर कल्याण ॥ ४७ ॥
धन्य धन्य सब जग के स्वामी,
धन्य धन्य श्री साई नमामी ।
साई साई मन मुख से गाना,
मानो मधुर मनोरथ पाना ॥ ४८ ॥
साई नाम जो जन मन लावे,
उस में शुभ सभी बस जावे ।
जहां हो साई नाम धुन नाद,
वहां से भागे विषम विषाद ॥ ४९ ॥
साई नाम मन तृप्त बुझावे,
सुधा रस सींच शांति ले आवे ।
साई साई जपिए कर भाव,
सुविधा सुविधि बने बनाव ॥ ५० ॥
छल कपट और खोट हैं,
तीन नरक के द्वार ।
झूठ करम को छोड के
करो सत्य व्यवहार ॥ ५१ ॥

जप तप तीर्थ ज्ञान ध्यान,
सब मिल नाहीं साई समान ।
सर्व व्यापक साई ज्ञाता,
मन वांछित प्राणि फलपाता ॥ ५२ ॥
जहां जगत में आवो जावो,
साई सुमिर साई को गावो ।
साई सभी में एक समान,
सब रुप को साई का जान ॥ ५३ ॥
मैं और मेरा कुछ नहीं अपना,
साई का नाम सत्य जग सपना ।
इतना जान लेहु सब कोय,
साई को भजे साई का होय ॥ ५४ ॥
ऐसे मन जब होवे लीन,
जल में प्यासी रहे न मीन ।
चित चढे इक रंग अनूप,
चेतन हो जाए साई स्वरुप ॥ ५५ ॥
जिसमें साई नाम शुभ जागे,
उस के पाप ताप सब भागे ।
मन से साई नाम जो उच्चारे,
उस के भागें भ्रम भय सारे ॥ ५६ ॥
सुख-दुःख तेरी देन है,
सुख-दुःख में तू आप ।
रोम-रोम में हे साई,
तू ही रह्यो व्याप ॥ ५७ ॥
जै-जै साई सच्चिदानन्दा
मुरली मनोहर परमानन्दा ।
पारब्रह्म परमेश्वर गोविन्दा,
निर्मल पावन ज्योत अखण्डा ॥ ५८ ॥
एकै ने सब खेल रचाया,
जो दीखे वो सब है माया ।
एको एक एक भगवान,
दो को तू ही माया जान ॥ ५९ ॥
बाहर भरम भूले संसार,
अन्दर प्रीतम साई अपार ।
जा को आप चाहे भगवन्त,
सो ही जाने साई अनन्त ॥ ६० ॥
जिस में बस जाय साई सुनाम,
होवे वह जन पूर्णकाम ।
चित मे साई नाम जो सिमरे,
निश्चय भव सागर से तरे ॥ ६१ ॥
साई सिमरन होवे सहाई,
साई सिमरन है सुखदाई ।
साई सिमरन सब से ऊँचा,

साई शक्ति सुख ज्ञान समूचा ॥ ६२ ॥
सुख दाता आपद् हरन,
साई गरीब निवाज ।
अपने बच्चों के साई,
सभी सुधारे काज ॥ ६३ ॥
मात पिता बान्धव सुत दारा,
धन जन साजन सखा प्यारा ।
अन्त काल दे सके न सहारा,
साई नाम तेरा तारन हारा ॥ ६४ ॥
आपन को न मान शरीर
तब तू जाने पर की पीड़ ।
घट में बाबा को पहचान,
करन करावन वाला जान ॥ ६५ ॥
अन्तरयामी जा को जान,
घट से देखो आठों याम ।
सिमरन साई नाम है संगी,
सखा स्नेही सुहृद् शुभ अंगी ॥ ६६ ॥
युग युग का है साई सहेला,
साई भक्त नहीं रहे अकेला ।
बाधा बड़ी विषम जब आवे,
वैर विरोध विघ्न बढ़ जावे ॥ ६७ ॥
साई नाम जपिए सुख दाता,
सच्चा साथी जो हितकर त्राटा ।
पूंजी साई नाम की पाइये,
पाथेय साथ नाम ले जाइये ॥ ६८ ॥
साई जाप कही ऊँची करणी,
बाधा विघ्न बहु दुःख हरणी ।
साई नाम महा मन्त्र जपना,
है सुव्रत नेम तप तपना ॥ ६९ ॥
बाबा से कर साची प्रीत,
यह ही भगत जनों की रीत ।
तू तो है बाबा का अंग,
जैसे सागर बीच तरंग ॥ ७० ॥
दीन दुःखी के सामने,
जिसका झुकता शीश ।
जीवन भर मिलता उसे,
बाबा का आशीश ॥ ७१ ॥
लेने वाले हाथ दो,
साई के सौ द्वार ।
एक द्वार को पूज ले,
हो जायेगा पार ॥ ७२ ॥

नमन

जय जय साई परमेश्वरा,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई पुरुषाय नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई शंकराय नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई रामाय नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई माधवाय नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई हनुमते नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई अकाल, पुरुषाय नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई नाथाय नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।

धुन

जय साई हरे जय साई हरे, साई राम हरे साई राम हरे
जय साई हरे जय साई हरे, जय साई हरे जय साई हरे
जो साई जपे उसके पाप कटे, भवसागर को वो पार करे
जय साई हरे जय साई हरे, जय साई हरे जय साई हरे
जो ध्यान धरे साई दर्शन करे, साई उसके सारे कष्ट हरे
जय साई हरे जय साई हरे, जय साई हरे जय साई हरे
साई रंग रगे साई प्रीत जगे, साई चरणो पर जो माथा धरे
जय साई हरे जय साई हरे, जय साई हरे जय साई हरे
जो शरण पड़े साई रक्षा करे, साई उसके सब भंडार भरे
जय साई हरे जय साई हरे, जय साई हरे जय साई हरे

मंगलमय प्रार्थना

सर्वेषां स्वस्ति भवतु, सर्वेषां शान्तिर्भवतु ।
सर्वेषां मंगलं भवतु, सर्वेषां पूर्णं भवतु ।
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ।

पद (साई रहम)

साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ।
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ॥ ध्रु ॥
जाना तुमने जगत्पसारा, सबही झूठ जमाना ।
जाना तुमने जगत्पसारा, सबही झूठ जमाना ॥
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ।
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ॥ १ ॥
मैं अंधा हूँ बंदा आपका, मुझसे प्रभु दिखलाना ।
मैं अंधा हूँ बंदा आपका, मुझसे प्रभु दिखलाना ॥
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ।
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ॥ २ ॥
दास गनू कहे अब क्या बोलूं, थक गई मेरी रसना ।
दास गनू कहे अब क्या बोलूं, थक गई मेरी रसना ॥
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ।
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ॥ ३ ॥

पद (रहम नजर करो)

रहम नजर करो, अब मोरे साईं,
तुमबिन नहीं मुझे मां–बापभाई । रहम नजर करो ॥ ध्रु ॥
मैं अंधा हूं बंदा तुम्हारा । मैं अंधा हूं बंदा तुम्हारा ॥
मैं ना जानूं, मैं ना जानूं, मैं ना जानूं, अल्लाइलाही ।
रहम नजर करो, रहम नजर करो, अब मोरे साईं ॥
तुमबिन नहीं मुझे मां–बापभाई । रहम नजर करो ॥ १ ॥
खाली जमाना मैंने गमाया । खाली जमाना मैंने गमाया ॥
साथी आखिरका, साथी आखिरका, साथी आखिरका किया न कोई ॥
रहम नजर करो, रहम नजर करो, अब मोरे साईं ।
तुमबिन नहीं मुझे मां–बापभाई । रहम नजर करो ॥ २ ॥
अपने मशीद का झाड़ू गनू है । अपने मशीद का झाड़ू गनू है ।
मालिक हमारे, मालिक हमारे, मालिक हमारे, तुम बाबा साईं ॥
रहम नजर करो, रहम नजर करो, अब मोरे साईं ।
तुमबिन नहीं मुझे मां–बापभाई । रहम नजर करो ॥ ३ ॥

Naivedyam (Bhog) Aarti

Aao bhog lagaao….Sab jag ke swami

Ruchi ruchi bhog lagaao…….Sab jag ke swami

Aisa bhog lagaao mere Babaji……Sab amrut ho jaaye sab jag ke swami

Aao bhog lagaao sab jag ke swami

Ruchi ruchi bhog lagaao sab jag ke swami

Shabari ke ber…..Sudama ke tandul, Ruchi ruchi bhog lagaao sab jag ke swami

Aao bhog lagaao sab jag ke swami

Ruchi ruchi bhog lagaao sab jag ke swami

Jo Koi iss bhog ko paaye…….Janam safal ho jaaye sab jag ke swami

Aao bhog lagaao sab jag ke Swami

Ruchi ruchi bhog lagaao sab jag ke swami…….

Bole Shri Satchidanand Sadguru Sainath Maharaj Ki Jai…..

काकड आरती *प्रातःकाळचा उपासनाक्रम*

॥ श्री सच्चिदानंद सद्‌गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

(१) आरती (ॐ जय जगदीश हरे)

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, भक्त जनों के संकट ॥
क्षण में दूर करे, ॐ जय जगदीश हरे ॥ १ ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का । स्वामी दुख बिनसे मन का ।
सुख सम्पति घर आवे, सुख सम्पति घर आवे
कष्ट मिटे तन का, ॐ जय जगदीश हरे ॥ २ ॥
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी ।
स्वामी शरण गहूं मैं किसकी ॥
तुम बिन और न दूजा, तुम बिन और न दूजा ॥
आस करूं जिसकी, ॐ जय जगदीश हरे ॥ ३ ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम अन्तर्यामी ।
पर ब्रह्म परमेश्वर, पर ब्रह्म परमेश्वर ।
तुम जगके स्वामी, ॐ जय जगदीश हरे ॥ ४ ॥
तुम करूणा के सागर, तुम पालन करता । स्वामी तुम पालन करता ॥
मैं मूरख खल कामी, मैं मूरख खल कामी ।
कृपा करो भरता, ॐ जय जगदीश हरे ॥ ५ ॥
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति, स्वामी सबके प्राणपति ।
किस विध मिलूं दयामय, किस विध मिलूं दयामय ।
तुमको मैं कुमति, ॐ जय जगदीश हरे ॥ ६ ॥
दीनबन्धु दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे । स्वामी तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ बढाओ, अपने हाथ बढाओ ।
द्वार पडा तेरे, ॐ जय जगदीश हरे ॥ ७ ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढाओ, श्रद्धा भक्ति बढाओ ।
सन्तन की सेवा, ॐ जय जगदीश हरे ॥ ८ ॥
पूर्णब्रह्म की आरति जो कोई गावे । स्वामी जो कोई गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी, कहत शिवानंद स्वामी ।
सुख संपति आवे, ॐ जय जगदीश हरे ॥ ९ ॥
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, भक्त जनों के संकट ॥
क्षण में दूर करे, ॐ जय जगदीश हरे ॥
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, भक्त जनों के संकट ॥
क्षण में दूर करे, ॐ जय जगदीश हरे ॥
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, भक्त जनों के संकट ॥
क्षण में दूर करे, ॐ जय जगदीश हरे ॥ १० ॥

(२) भूपाळी

जोडूनियां कर चरणीं ठेविला माथा ।
परिसावी विनंती माझी पंढरीनाथा ॥ १ ॥
असो नसो भाव आलों तूझिया ठाया ।
कृपादृष्टीं पाहें मजकडे सद्‌गुरूराया ॥ २ ॥
अखंडीत असावें ऐसें वाटतें पायीं ।
सांडूनी संकोच ठाव थोडासा देईं ॥ ३ ॥
तुका म्हणे देवा माझी वेडी वांकुडी ।
नामें भवपाश हातीं आपुल्या तोडी ॥ ४ ॥

(३) भूपाळी

उठा पांडुरंगा आतां प्रभातसमयो पातला ।
वैष्णवांचा मेळा गरुडपारीं दाटला ॥ १ ॥
गरुडपारापासुनी महा–द्वारा–पर्यंत ।
सुरवरांची मांदी उभी जोडूनियां हात ॥ २ ॥
शुकसनकादिक नारद–तुंबर भक्तांच्या कोटी ।
त्रिशूल–डमरू घेउनि उभा गिरिजेचा पती ॥ ३ ॥
कलीयुगींचा भक्त नामा उभा कीर्तनीं ।
पाठीमागें उभी डोळा लावुनियां जनी ॥ ४ ॥

(४) भूपाळी *(चाल घनश्यामसुंदरा श्रीधरा०)*

उठा उठा श्रीसाईनाथ गुरू चरणकमल दावा ।
आधि–व्याधि भवताप वारूनी तारा जडजीवा ॥ धृ ॥
गेली तुम्हा सोडूनियां भव–तम–रजनी विलया ।
परि ही अज्ञानासी तुमची भुलवि योगमाया ।
शक्ति न आम्हां यत्किंचतही तिजला साराया ।
तुम्हीच तीतें सारुनि दावा मुख जन ताराया ॥ चा० ॥
भो साईनाथ महाराज भव–तिमिर–नाशक रवि ।
अज्ञानी आम्ही किती तव वर्णावी थोरवी ॥
ती वर्णितां भागले बहुवदनि शेष विधि कवी ॥ चा० ॥
सकृप होऊनि महिमा तुमचा तुम्हीच वदवावा ।
आधि व्याधि भवताप वारूनी तारा जडजीवा ॥
उठा उठा श्रीसाईनाथ गुरू चरणकमल दावा ।
आधि–व्याधि भवताप वारूनी तारा जडजीवा ॥ १ ॥

भक्त मनीं सद्भाव धरूनि जे तुम्हां अनुसरले ।
ध्यायास्तव ते दर्शन तुमचें द्वारिं उभे ठेले ।
ध्यानस्था तुम्हास पाहुनी मन अमुचें धाले ।
परी त्वद्वचना–मृत प्राशायातें आतुर झाले ॥ चा० ॥
उघडूनी नेत्रकमला दीनबंधु रमाकांता ।
पाहीं वा कृपादृष्टी बालका जशी माता ।
रंजवी मधुरवाणी हरीं ताप साईनाथा ॥ चा० ॥
आम्हीच आपुले कार्यास्तव तुज कष्टवितों देवा ।
सहन करिशील तें ऐकुनि द्यावी भेट कृष्ण धांवा ॥
उठा उठा श्रीसाईनाथ गुरू चरणकमल दावा ।
आधि–व्याधि भवताप वारूनी तारा जडजीवा ॥ २ ॥

(५) भूपाळी

उठा पांडुरंगा आतां दर्शन द्या सकळां ।
झाला अरुणोदय सरली निद्रेची वेळा ॥ १ ॥
संत साधू मुनी अवघे झालेती गोळा ।
सोडा शेजे सुखें आता बघुं द्या मुखकमळा ॥ २ ॥
रंगमंडपीं महाद्वारीं झालीसे दाटी ।
मन उतावीळ रूप पहावया दृष्टी ॥ ३ ॥
राही रखुमाबाई तुम्हा येऊं द्या दया ।
शेजे हालवुनी जागें करा देवराया ॥ ४ ॥
गरुड हनुमंत उभे पाहती वाट ।
स्वर्गींचे सुरवर घेउनि आले बो–भाट ॥ ५ ॥
झालें मुक्तद्वार लाभ झाला रोकडा ।
विष्णुदास नामा उभा घेऊनि कांकडा ॥ ६ ॥

(६) अभंग

घेउनियां पंचारती । करूं बाबांची आरती ॥ १ ॥
उठा उठा हो बांधव । ओंवाळूं हा रमाधव ॥ २ ॥
करूनीयां स्थिर मन । पाहू गंभीर हें ध्यान ॥ ३ ॥
कृष्णनाथा दत्तसाई । जडो चित्त तुझे पायीं ॥ ४ ॥

(७) काकड आरती

काकड आरती करितों साईनाथ देवा ।
चिन्मयरूप दाखवी घेऊनि बालक–लघुसेवा ॥ ध्रु ॥
काम क्रोध मद मत्सर आटवुनि काकडा केला ।
वैराग्याचें तूप घालुनि मी तो भिजविला ।
साईनाथ गुरूभक्तिज्वलनें तो मी पेटविला ।
तद्वृत्ती जाळूनी गुरूने प्रकाश पाडिला ।
द्वैत तमा नासूनी मिळवी तत्स्वरूपी जीवा ।
चिन्मयरूप दाखवी घेऊनि बालक–लघुसेवा ॥
काकड आरती करितों साईनाथ देवा ।
चिन्मयरूप दाखवी घेऊनि बालक–लघुसेवा ॥ १ ॥
भू–खेचर व्यापुनी अवघे हृत्कमलीं राहसी ।
तोची दत्तदेव शिरडी राहुनी पावसी ।
राहुनी येथें अन्यत्रहि तु भक्तास्तव धावसी ।
निरसुनियां संकटा दासा अनुभव दाविसी ।
न कळे त्वल्लीलाही कोण्या देवा वा मानवा ।
चिन्मयरूप दाखवी घेऊनि बालक–लघुसेवा ॥
काकड आरती करितों साईनाथ देवा ।
चिन्मयरूप दाखवी घेऊनि बालक–लघुसेवा ॥ २ ॥
त्वद्यशदुं–दुभीनें सारें अंबर हें कोंदलें ।
सगुण मूर्ति पाहण्या आतुर जन शिरडी आले ।
प्राशुनि त्वद्वचनामृत आमुचे देहभान हरपले ।
सोडुनियां दुर–अभिमान मानस त्वच्चरणीं वाहिले ।
कृपा करूनिया साईमाउले दास पदरी घ्यावा ।
चिन्मयरूप दाखवी घेऊनि बालक–लघुसेवा ॥
काकड आरती करितों साईनाथ देवा ।
चिन्मयरूप दाखवी घेऊनि बालक–लघुसेवा ॥ ३ ॥

(८) काकड आरती

भक्तीचिया पोटीं बोध काकडा ज्योती ।
पंचप्राण जीवेभावें ओवाळूं आरती ॥ १ ॥
ओवाळूं आरती माझ्या पंढरीनाथा । माझ्या साईनाथा ।
दोन्ही करं जोडोनी चरणीं ठेविला माथा ॥ ध्रु ॥
काय महिमा वर्णू आता सांगणे किती ।
कोटी ब्रह्महत्या मुख पाहतां जाती ॥ २ ॥
राही रखुमाबाई उभ्या दोघी दो बाहीं ।
मयूर पिच्छ चामरें ढाळिती साईंच्या ठायीं ॥ ३ ॥
तुका म्हणे हे दीप घेऊनि उन्मनीत शोभा ।
विटेवरी उभा दिसे लावण्यगाभा ॥
ओवाळूं आरती माझ्या पंढरीनाथा । माझ्या साईनाथा ।
दोन्ही करं जोडोनी चरणीं ठेविला माथा ॥ ४ ॥

(९) पद (उठा उठा)

उठा साधुसंत साधा आपुलालें हित ।
जाईल जाईल हा नरदेह मग कैंचा भगवंत ॥ १ ॥
उठोनियां पहाटे बाबा उभा असे विटे ।
चरण तयांचे गोमटे अमृतदृष्टी अवलोका ॥ २ ॥
उठा उठा हो वेगेंसी चला जाऊया राउळासी ।
जळतील पातकांच्या राशी काकडआरती देखिलिया ॥ ३ ॥
जागे करा रुक्मिणीवरा, देव आहे निजसुरांत ।
वेगें लिंबलोण करा दृष्ट होईल तयासीं ॥ ४ ॥
दारीं वाजंत्री वाजती ढोल दमामे गर्जती ।
होतसे काकडआरती माझ्या सद्गुरूरायांची ॥ ५ ॥
सिंहनाद शंखभेरी आनंद होतसे महाद्वारी ।
केशवराज विटेवरी नामा चरण वंदितो ॥ ६ ॥

(१०) भजन

साईनाथ गुरु माझे आई । मजला ठाव द्यावा पायीं ॥
दत्तराज गुरु माझे आई । मजला ठाव द्यावा पायीं ॥
साईनाथ गुरु माझे आई । मजला ठाव द्यावा पायीं ॥
दत्तराज गुरु माझे आई । मजला ठाव द्यावा पायीं ॥
साईनाथ गुरु माझे आई । मजला ठाव द्यावा पायीं ॥
दत्तराज गुरु माझे आई । मजला ठाव द्यावा पायीं ॥

॥ श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

(११) श्री साईनाथप्रभाताष्टक

(पृथ्वी)

प्रभातसमयीं नभा शुभ रविप्रभा फाकली ।
स्मरे गुरू सदा अशा समयीं त्या छळे ना कली ॥
म्हणोनि कर जोडोनि करूं अतां गुरूप्रार्थना ।
समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना ॥ १ ॥

तमा निरसि भानु हा गुरूहि नाशी अज्ञानता ।
परंतु गुरूची करी न रविही कधीं साम्यता ॥
पुन्हा तिमिर जन्म घे गुरुकृपेनि अज्ञान ना ।
समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना ॥ २ ॥

रवि प्रगट होउनि त्वरित घालवी आलसा ।
तसा गुरुहि सोडवी सकल दुष्कृतीलालसा ॥
हरोनि अभिमानही जडवि त्वतपदीं भावना ।
समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना ॥ ३ ॥

गुरुसि उपमा दिसे विधिहरीहरांची उणी ।
कुठोनि मग येई ती कवनि या उगी पाहुनी ॥
तुझीच उपमा तुला बरवि शोभते सज्जना ।
समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना ॥ ४ ॥

समाधि उतरोनियां गुरु चला मशीदीकडे ।
त्वदीय वचनोक्ति ती मधुर वारिती साकडें ॥
अजातरिपु सद्गुरो अखिलपातका भंजना ।
समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना ॥ ५ ॥

अहा सुसमयासि या गुरु उठोनियां बैसले ।
विलोकुनि पदाश्रिता तदिय आपदे नासिले ॥
असा सुहितकारि या जगति कोणिही अन्य ना ।
समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना ॥ ६ ॥

असे बहुत शाहणा परि न ज्या गुरुची कृपा ।
न तत्स्वहित त्या कळे करितसे रिकाम्या गपा ॥
जरी गुरुपदा धरी सुदृढ भक्तिनें तो मना ।
समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना ॥ ७ ॥

गुरो विनति मी करी हृदयमंदिरीं या बसा ।
समस्त जग हें गुरुस्वरूपची ठसो मानसा ॥
घडो सतत सत्कृती मतिहि दे जगत्पावना ।
समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना ॥ ८ ॥

(स्त्रग्धरा)

प्रेमें या अष्टकासी पढुनि गुरुवरा प्रार्थिती जे प्रभातीं ।
त्यांचें चित्तासि देतो अखिल हरुनियां भ्रांति मी नित्य शांती ॥
ऐसें हें साईनाथे कथुनी सुचविलें जेंवि या बालकासी ।
तेवी त्या कृष्णपायी नमुनि सविनयें अर्पितों अष्टकासी ॥ ९ ॥

॥ श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

(१२) पद (साई रहम)

साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ।
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ॥ ध्रु ॥
जाना तुमने जगत्पसारा, सबही झूठ जमाना ।
जाना तुमने जगत्पसारा, सबही झूठ जमाना ॥
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ।
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ॥ १ ॥
मैं अंधा हूँ बंदा आपका, मुझसे प्रभु दिखलाना ।
मैं अंधा हूँ बंदा आपका, मुझसे प्रभु दिखलाना ॥
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ।
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ॥ २ ॥
दास गनू कहे अब क्या बोलूं, थक गई मेरी रसना ।
दास गनू कहे अब क्या बोलूं, थक गई मेरी रसना ॥
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ।
साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ॥ ३ ॥

(१३) पद (रहम नजर करो)

रहम नजर करो, अब मोरे साईं,
तुमबिन नहीं मुझे मां–बापभाई । रहम नजर करो ॥ ध्रु ॥
मैं अंधा हूं बंदा तुम्हारा । मैं अंधा हूं बंदा तुम्हारा ॥
मैं ना जानूं, मैं ना जानूं, मैं ना जानूं, अल्लाइलाही ।
रहम नजर करो, रहम नजर करो, अब मोरे साईं ॥
तुमबिन नहीं मुझे मां–बापभाई । रहम नजर करो ॥ १ ॥
खाली जमाना मैंने गमाया । खाली जमाना मैंने गमाया ॥
साथी आखिरका, साथी आखिरका, साथी आखिरका किया न कोई ॥
रहम नजर करो, रहम नजर करो, अब मोरे साईं ।
तुमबिन नहीं मुझे मां–बापभाई । रहम नजर करो ॥ २ ॥
अपने मशीद का झाडू गनू है । अपने मशीद का झाडू गनू है ।
मालिक हमारे, मालिक हमारे, मालिक हमारे, तुम बाबा साईं ॥
रहम नजर करो, रहम नजर करो, अब मोरे साईं ।
तुमबिन नहीं मुझे मां–बापभाई । रहम नजर करो ॥ ३ ॥

(१४) पद (तुज काय देऊं)

तुज काय देऊं सावळ्या मी खाया तरी हो ।
तुज काय देऊं सद्‌गुरू मी खाया तरी ॥
मी दुबळी बटिक नाम्याची जाण श्रीहरी ।
मी दुबळी बटिक नाम्याची जाण श्रीहरी ॥
उच्छिष्ट तुला देणे ही गोष्ट ना बरी हो ।
उच्छिष्ट तुला देणे ही गोष्ट ना बरी ॥
तूं जगन्नाथ, तुज देऊं कशी रे भाकरी ।
तूं जगन्नाथ, तुज देऊं कशी रे भाकरी ॥
नको अंत मदीय पाहूं सख्या भगवंता । श्रीकांता ।
माध्यान्हरात्र उलटोनि गेली ही आतां । आण चित्ता ॥
जा होईल तुझा रे काकडा कीं राउळांतरीं हो ।
जा होईल तुझा रे काकडा कीं राउळांतरीं ॥
आणतील भक्त नैवेद्यहि नानापरी ।
आणतील भक्त नैवेद्यहि नानापरी ॥
तुज काय देऊं सावळ्या मी खाया तरी हो ।
तुज काय देऊं सद्‌गुरु मी खाया तरी ॥
मी दुबळी बटिक नाम्याची जाण श्रीहरी ।
मी दुबळी बटिक नाम्याची जाण श्रीहरी ॥

(१५) पद (श्रीसद्‌गुरू बाबासाई)

श्रीसद्‌गुरू बाबासाई हो । श्रीसद्‌गुरू बाबासाई ।
तुजवांचुनि आश्रय नाहीं भूतलीं । तुजवांचुनि आश्रय नाहीं भूतलीं ॥ ध्रु ॥
मी पापी पतित धीमंद हो । मी पापी पतित धीमंद ।
तारणें मला गुरूनाथा झडकरी । तारणें मला साईनाथा झडकरी ॥ १ ॥
तूं शांतिक्षमेचा मेरू हो । तूं शांतिक्षमेचा मेरू ।
तुम्ही भवार्णवींचें तारूं, गुरूवरा । तुम्ही भवार्णवींचें तारूं, गुरूवरा ॥ २ ॥
गुरूवरा मजसि पामरा, अतां उद्धरा, त्वरित लवलाही, त्वरित लवलाही ।
मी बुडतो भवभय डोही उद्धरा । मी बुडतो भवभय डोही उद्धरा ॥
श्रीसद्‌गुरू बाबासाई हो । श्रीसद्‌गुरू बाबासाई ।
तुजवांचुनि आश्रय नाहीं, भूतलीं । तुजवांचुनि आश्रय नाहीं, भूतलीं ॥ ३ ॥

॥ श्री सच्चिदानंद सद्‌गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

॥ अनंतकोटी ब्रह्मांडनायक राजाधिराज योगिराज परब्रह्म
श्री सच्चिदानंद सद्‌गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

॥ श्री सच्चिदानंद सद्‌गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

Sai Baba's Aarti after Kakkad Aarti and abhishekam

आरती श्री साई गुरुवर की परमानन्द सदा सुरवर की
जाके कृपा विपुल सुख कारी दुःख शोक संकट भ्ररहारी
आरती श्री साई गुरुवर की..

शिर्डी में अवतार रचाया चमत्कार से तत्व दिखाया
कितने भक्त शरण में आए वे सुख शांति निरंतर पाए
आरती श्री साई गुरुवार की...

भाव धरे जो मन मैं जैसा साई का अनुभव हो वैसा
गुरु को उदी लगावे तन को समाधान लाभत उस तन को
आरती श्री साई गुरुवर की...

साईं नाम सदा जो गावे सो फल जग में साश्वत पावे
गुरुवार सदा करे पूजा सेवा उस पर कृपा करत गुरु देवा
आरती श्री साई गुरुवर की ....

राम कृष्ण हनुमान रूप में दे दर्शन जानत जो मन में
विविध धरम के सेवक आते दर्शनकर इचित फल पाते
आरती श्री साई गुरुवर की....

जय बोलो साई बाबा की ,जय बोलो अवधूत गुरु की
साई की आरती जो कोई गावे घर में बसी सुख मंगल पावे
आरती श्री साई गुरुवर की...

अनंत कोटि ब्रह्मांड नायक राजा धिराज योगी राज ,जय जय जय साई बाबा की
आरती श्री साई गुरुवर की परमानंद सुरवर की ...

मध्यान्ह आरती

दुपारी १२ वाजता

॥ श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

(१) अभंग

घेउनियां पंचारती । करूं बाबांची आरती ॥
करूं साईंची आरती । करूं बाबांची आरती ॥ १ ॥
उठा उठा हो बांधव । ओवाळूं हा रमाधव ॥
साई रमाधव । ओवाळूं हा रमाधव ॥ २ ॥
करूनिया स्थिर मन । पाहूं गंभीर हे ध्यान ।
साईंचे हे ध्यान । पाहूं गंभीर हे ध्यान ॥ ३ ॥
कृष्णनाथा दत्तसाई । जडो चित्त तुझे पायीं ॥
चित्त बाबां पायीं । जडो चित्त तुझे पायीं ॥ ४ ॥

(२) आरती *(रचना : श्री माधवराव वामनराव अडकर)*

आरती साईबाबा । सौख्यदातारा जीवा । चरणरजातळीं ।
द्यावा दासां विसांवा।भक्तां विसांवा ।भक्तां विसांवा॥आरती साईबाबा ॥ध्रु॥
जाळुनियां अनंग । स्वस्वरूपीं राहे दंग । मुमुक्षु जना दावी ।
निजडोळां श्रीरंग । डोळां श्रीरंग ॥ आरती साईबाबा ॥ १ ॥
जया मनीं जैसा भाव । तया तैसा अनुभव । दाविसी दयाधना ।
ऐसी तुझी ही माव । तुझी ही माव ॥ आरती साईबाबा ॥ २ ॥
तुमचें नाम घ्यातां । हरे संसृतिव्यथा । अगाध तव करणी ।
मार्ग दाविसी अनाथा । दाविसी अनाथा ॥ आरती साईबाबा ॥ ३ ॥
कलियुगीं अवतार । सगुण पर ब्रह्म साचार । अवतीर्ण जाहलासे ।
स्वामी दत्तदिगंबर । दत्तदिगंबर ॥ आरती साईबाबा ॥ ४ ॥
आठां दिवसां गुरुवारीं । भक्त करिती वारी । प्रभुपद पहावया ।
भवभय निवारी । भय निवारी ॥ आरती साईबाबा ॥ ५ ॥
माझा निज द्रव्यठेवा । तव चरणरजसेवा । मागणें हेंचि आतां ।
तुम्हां देवाधिदेवा । देवाधिदेवा ॥ आरती साईबाबा ॥ ६ ॥
इच्छित दीन चातक । निर्मळ तोय निजसुख । पाजावें माधवा या ।
सांभाळ आपुली ही भाक । आपुली ही भाक ॥
आरती साईबाबा । सौख्यदातारा जीवा । चरणरजातळीं ।
द्यावा दासां विसावा । भक्तां विसावां ॥ आरती साईबाबा ॥ ७ ॥

(३) आरती

जय देव जय देव दत्ता अवधुता । हो साई अवधुता ।
जोडूनि कर तव चरणी ठेवितों माथा । जय देव जय देव ॥ धृ ॥
अवतरसी तूं ते येतां धर्माते ग्लानी ।
नास्तीकांनाही तूं लाविसि निजभजनीं ।
दावीसी नाना लीला असंख्य रूपांनी ।
हरिसी दीनांचें तूं संकट दिनरजनी ॥
जय देव जय देव दत्ता अवधुता । हो साई अवधुता ।
जोडूनि कर तव चरणी ठेवितों माथा । जय देव जय देव ॥ १ ॥
यवनस्वरूपी एक्या दर्शन त्वां दिधले ।
संशय निरसुनियां तद्द्वैता घालविले ।
गोपीचंदा मंदा त्वांजी उद्धरिले । मोमिन वंशी जन्मुनि लोकां तारियले ।
जय देव जय देव दत्ता अवधुता । हो साई अवधुता ।
जोडूनि कर तव चरणी ठेवितों माथा । जय देव जय देव ॥ २ ॥
भेद न तत्वी हिंदूयवनांचा कांही । दावायासी झाला पुनरपि नरदेही ।
पाहसि प्रेमाने तू हिंदूयवनांही । दाविसी आत्मत्वाने व्यापक हा साई ॥
जय देव जय देव दत्ता अवधुता । हो साई अवधुता ।
जोडूनि कर तव चरणी ठेवितों माथा । जय देव जय देव ॥ ३ ॥
देवा साईनाथा त्वत्पदनत व्हावें । परमायामोहित जनमोचन झणिं व्हावें ।
त्वकृपया सकलांचे संकट निरसावे । देशिल तरि दे त्वद्यश कृष्णानें गावें॥
जय देव जय देव दत्ता अवधुता । हो साई अवधुता ।
जोडूनि कर तव चरणी ठेवितों माथा । जय देव जय देव ॥ ४ ॥

(४) अभंग *(रचना : श्री दासगणु महाराज)*

शिर्डी माझे पंढरपूर । साईबाबा रमावर ॥
बाबा रमावर । साईबाबा रमावर ॥ १ ॥
शुद्ध भक्ती चंद्रभागा । भाव पुंडलीक जागा ॥
पुंडलीक जागा । भाव पुंडलीक जागा ॥ २ ॥
या हो या हो अवघेजन । करा बाबांसी वंदन ॥
साईसी वंदन । करू बाबांसी वंदन ॥ ३ ॥
गणू म्हणे बाबा साई । धाव पाव माझे आई ॥
पाव माझे आई ॥ धाव पाव माझे आई ॥ ४ ॥

(५) नमन व समर्पण

घालिन लोटांगण, वंदीन चरण । डोळ्यांनीं पाहिन रूप तुझें ।
प्रेमें आलिंगिन आनंदें पूजिन । भावें ओंवाळिन म्हणे नामा ॥ १ ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव । त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव । त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥ २ ॥
कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा, बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात् ।
करोनि यद्यत् सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि ॥ ३ ॥
अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिं ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं, जानकीनायकं रामचंद्रं भजे ॥ ४ ॥
हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे । हरे कृष्ण, हरे कृष्ण,
कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥ हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे । हरे कृष्ण,
हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥ हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥ ५ ॥

॥ श्री गुरुदेव दत्त ॥

(६) मंत्रपुष्पांजली

हरि ॐ

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने । नमो वयं वै श्रवणाय कुर्महे ।
स मे कामान् कामकामाय मह्यं । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।
कुबेराय वैश्रवणाया महाराजाय नमः ।
ॐ स्वस्ति । साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं
राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्या ईस्यात्
सार्वभौमः सार्वायुष आंतादापरार्धात् ।
पृथिव्यै समुद्रपर्यंताया एकराळिति ।
तदप्येषः श्लोको ऽ भिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्या ऽ वसन् गृहे ।
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥
श्री नारायण वासुदेवाय सच्चिदानंद सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय

(७) नमस्काराष्टक (रचना : श्री मोहनी राज)

अनंता तुला तें कसें रे स्तवावें । अनंता तुला तें कसें रे नमावे ॥
अनंता मुखांचा शिणे शेष गातां । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ १ ॥
स्मरावें मनीं त्वत्पदां नित्य भावें । उरावें तरी भक्तिसाठीं स्वभावें ॥
तरावें जगा तारुनी मायताता । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ २ ॥
वसे जो सदा दावया संतलीला । दिसे अज्ञ लोकांपरी जो जनांला ॥
परी अंतरीं ज्ञान कैवल्यदाता । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ ३ ॥
बरा लाधला जन्म हा मानवाचा । नरा सार्थका साधनीभूत साचा ॥
धरूं साईप्रेमा गळाया अहंता । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ ४ ॥
धरावें करीं सान अल्पज्ञ बाला । करावें अम्हां धन्य चुंबोनि गाला ॥
मुखीं घाल प्रेमें खरा ग्रास आतां । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ ५ ॥
सुरादीक ज्यांच्या पदा वंदिताती । शुकादीक ज्यांतें समानत्व देती ॥
प्रयागादि तीर्थे पदीं नम्र होतां । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ ६ ॥
तुझ्या ज्या पदा पाहतां गोपबाली । सदा रंगली चित्स्वरूपीं मिळाली ॥
करी रासक्रीडा सवें कृष्णनाथा । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ ७ ॥
तुला मागतों मागणें एक द्यावें । करा जोडितों दीन अत्यंत भावें ॥
भवीं मोहनीराज हा तारिं आतां । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ ८ ॥

(८) प्रार्थना

ऐसा येइबा । साईदिगंबरा । अक्षयरूप अवतारा । सर्वहि व्यापक तूं ।
श्रुतिसारा । अनुसयाऽत्रिकुमारा । बाबा येइ बा ॥ धृ ॥
काशी स्नान जपा, प्रतिदिवशीं । कोल्हापुर भिक्षेसी ।
निर्मल नदि तुगां, जल प्राशी । निद्रा माहुर देशीं ॥ ऐसा येइबा ॥ १ ॥
झोळी लोंबतसे वाम करीं । त्रिशूल–डुमरु–धारी ।
भक्तां वरद सदा सुखकारी । देशील मुक्ती चारी ॥ ऐसा येइबा ॥ २ ॥
पायी पादुका जपमाळा कमंडलू मृगछाला ।
धारण करिशी बा नागजटा । मुगुट शोभतो माथां ॥ ऐसा येइबा ॥ ३ ॥
तत्पर तुझ्या या जे ध्यानीं । अक्षय त्यांचे सदनी ।
लक्ष्मी वास करी दिनरजनी । रक्षिसि संकट वारुनि ॥ ऐसा येइबा ॥४ ॥
यापरि ध्यान तुझें गुरुराया, दृश्य करी नयनां या ।
पूर्णानंदसुखे ही काया । लाविसि हरिगुण गाया । ऐसा येइबा ।
साईदिगंबरा । अक्षयरूप अवतारा । सर्वहि व्यापक तूं ।
श्रुतिसारा । अनुसयाऽत्रिकुमारा । बाबा येइ बा ॥ ५ ॥

(९) श्री साईनाथमहिम्नस्तोत्रम्

(रचना : श्री उपासनी बाबा महाराज)

सदा सत्सवरूपं चिदानंदकंदं, जगत्संभवस्थानसंहारहेतुम् ।
स्वभक्तेच्छया मानुषं दर्शयंतं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ १ ॥
भवध्वांतविध्वंसमार्तंडमीड्यं, मनोवागतीतं मुनिर्ध्यानगम्यम् ।
जगद्व्यापकं निर्मलं निर्गुणं त्वां, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ २ ॥
भवांबोधिमग्नार्दितानां जनानां, स्वपादाश्रितानां स्वभक्तिप्रियाणाम् ।
समुद्धाराणार्थं कलौ संभवंतं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ ३ ॥
सदा निंबवृक्षस्य मूलाधिवासात्सुधास्राविणं तिक्तमप्यप्रियं तम् ।
तरुं कल्पवृक्षाधिकं साधयंतं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ ४ ॥
सदा कल्पवृक्षस्य तस्याधिमूले भवद्भावबुध्या सपर्यादिसेवाम् नृणां
कुर्वतां भुक्तिमुक्तिप्रदं तं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ ५ ॥
अनेकाश्रुतातर्क्यलीलाविलासैः, समाविष्कृतेशानभास्वत्प्रभावम् ।
अहंभावहीनं प्रसन्नात्मभावं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ ६ ॥
सतां विश्रमाराममेवाभिरामं सदा सज्जनैः संस्तुतं सन्नमद्भिः ।
जनामोददं भक्तभद्रप्रदं तं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ ७ ॥
अजन्माद्यमेकं परं ब्रह्म साक्षात्स्वयं संभवं राममेवावतीर्णम् ।
भवद्दर्शनात्संपुनीतः प्रभोऽहं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ ८ ॥
श्रीसाईशकृपानिधेऽखिलनृणां सर्वार्थसिद्धिप्रद ।
युष्मत्पादरजः प्रभावमतुलं धातापिवक्ताऽक्षमः ॥
सद्भक्त्या शरणं कृतांजलिपुटः संप्रापितोऽस्मि
प्रभो श्रीमत्साईपरेशपादकमलान्नान्यच्छरण्यं मम ॥ ९ ॥
साईरूपधरराघवोत्तमं, भक्तकामविबुधद्रुमंप्रभुम् ।
माययोपहतचित्तशुद्धये, चिंतयाम्यहमहर्निशं मुदा ॥ १० ॥
शरत्सुधांशुप्रतिमप्रकाशं, कृपातपत्रं तव साईनाथ ।
त्वदीयपादाब्जसमाश्रितानां स्वच्छायया तापमपाकरोतु ॥ ११ ॥
उपासनादैवतसाईनाथ स्तवैर्मयोपासनिना स्तुतस्त्वम् ।
रमेन्मनो मे तव पादयुग्मे, भृङ्गो यथाब्जे मकरंदलुब्धः ॥ १२ ॥
अनेक जन्मार्जितपापसंक्षयो, भवेद्भवत्पादसरोजदर्शनात् ।
क्षमस्व सर्वानपराधपुंजकान्प्रसीद साईश गुरो दयानिधे ॥ १३ ॥
श्रीसाईनाथचरणामृतपूतचित्तास्तत्पादसेवनरताः सततं च भक्त्या ।
संसारजन्य दुरितौघविनिर्गतास्ते कैवल्यधाम परमं समवाप्तुवन्ति ॥१४॥
स्तोत्रमेतत्पठेद्भक्त्या यो नरस्तन्मनाः सदा ।
सद्गुरुसाईनाथस्य कृपापात्रं भवेद् ध्रुवम् ॥ १५ ॥
साईनाथकृपास्वर्द्रुमसत्पद्यकुसुमावलिः ।
श्रेयसे च मनःशुद्ध्यै प्रेमसूत्रेण गुंफिता ॥ १६ ॥
गोविंदसूरिपुत्रेण काशीनाथाभिधायिना ।
उपासनीत्युपाख्येन श्रीसाईगुरवेऽर्पिता ॥ १७ ॥
॥ इति श्रीसाईनाथमहिम्न स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

(१०) प्रार्थना

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा ।
श्रवणनयनजं वा मानसं वा ऽ पराधम् ॥
विहितमविहितं वा सर्वमतेत्क्षमस्व ।
जय जय करुणाब्धे श्री प्रभो साईनाथ ॥ १ ॥
॥ श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

॥ अनंतकोटी ब्रह्मांडनायक राजाधिराज योगिराज परब्रह्म
श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

धूप आरती सायंकाळी ७.३० वाजता

॥ श्री सच्चिदानंद सद्गुरू साईनाथ महाराज की जय ॥

(१) आरती (रचना : श्री माधवराव वामनराव अडकर)

आरती साईबाबा । सौख्यदातारा जीवा । चरणरजातळीं ।
द्यावा दासां विसांवा।भक्तां विसांवा ।भक्तां विसांवा॥आरती साईबाबा ॥ध्रु॥
जाळुनियां अनंग । स्वस्वरूपीं राहे दंग । मुमुक्षु जना दावी ।
निजडोळां श्रीरंग । डोळां श्रीरंग ॥ आरती साईबाबा ॥ १ ॥
जया मनीं जैसा भाव । तया तैसा अनुभव । दाविसी दयाघना ।
ऐसी तुझी ही माव । तुझी ही माव ॥ आरती साईबाबा ॥ २ ॥
तुमचें नाम घ्यातां । हरे संसृतिव्यथा । अगाध तव करणी ।
मार्ग दाविसी अनाथा । दाविसी अनाथा ॥ आरती साईबाबा ॥ ३ ॥
कलियुगीं अवतार । सगुण पर ब्रह्म साचार । अवतीर्ण जाहलासे ।
स्वामी दत्तदिगंबर । दत्तदिगंबर ॥ आरती साईबाबा ॥ ४ ॥
आठां दिवसां गुरुवारीं । भक्त करिती वारी । प्रभुपद पहावया ।
भवभय निवारी । भय निवारी ॥ आरती साईबाबा ॥ ५ ॥
माझा निज द्रव्यठेवा । तव चरणरजसेवा । मागणें हेंचि आतां ।
तुम्हां देवाधिदेवा । देवाधिदेवा ॥ आरती साईबाबा ॥ ६ ॥
इच्छित दीन चातक । निर्मळ तोय निजसुख । पाजावें माधवा या ।
सांभाळ आपुली ही भाक । आपुली ही भाक ॥
आरती साईबाबा । सौख्यदातारा जीवा । चरणरजातळीं ।
द्यावा दासां विसावा । भक्तां विसावां ॥ आरती साईबाबा ॥ ७ ॥

(२) अभंग (रचना : श्री दासगणु महाराज)

शिर्डी माझे पंढरपूर । साईबाबा रमावर ॥
बाबा रमावर । साईबाबा रमावर ॥ १ ॥
शुद्ध भक्ती चंद्रभागा । भाव पुंडलीक जागा ॥
पुंडलीक जागा । भाव पुंडलीक जागा ॥ २ ॥
या हो या हो अवघेजन । करा बाबांसी वंदन ॥
साईसी वंदन । करू बाबांसी वंदन ॥ ३ ॥
गणू म्हणे बाबा साई । धाव पाव माझे आई ॥
पाव माझे आई ॥ धाव पाव माझे आई ॥ ४ ॥

(३) नमन व समर्पण

घालिन लोटांगण, वंदीन चरण । डोळ्यांनीं पाहिन रूप तुझें ।
प्रेमें आलिंगिन आनंदें पूजिन । भावें ओंवाळिन म्हणे नामा ॥ १ ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव । त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव । त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥ २ ॥
कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा, बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात् ।
करोनि यद्यत् सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि ॥ ३ ॥
अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिं ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं, जानकीनायकं रामचंद्रं भजे ॥ ४ ॥
हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे । हरे कृष्ण, हरे कृष्ण,
कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥ हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे । हरे कृष्ण,
हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥ हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥ ५ ॥

॥ श्री गुरुदेव दत्त ॥

(४) नमस्काराष्टक (रचना : श्री मोहनी राज)

अनंता तुला तें कसें रे स्तवावें । अनंता तुला तें कसें रे नमावे ॥
अनंता मुखांचा शिणे शेष गातां । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ १ ॥
स्मरावें मनीं त्वत्पदां नित्य भावें । उरावें तरी भक्तिसाठीं स्वभावें ॥
तरावें जगा तारुनी मायताता । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ २ ॥
वसे जो सदा दावया संतलीला । दिसे अज्ञ लोकांपरी जो जनांला ॥
परी अंतरीं ज्ञान कैवल्यदाता । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ ३ ॥
बरा लाधला जन्म हा मानवाचा । नरा सार्थका साधनीभूत साचा ॥
धरूं साईप्रेमा गळाया अहंता । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ ४ ॥
धरावें करीं सान अल्पज्ञ बाला । करावें अम्हां धन्य चुंबोनि गाला ॥
मुखीं घाल प्रेमें खरा ग्रास आतां । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ ५ ॥
सुरादीक ज्यांच्या पदा वंदिताती । शुकादीक ज्यांतें समानत्व देती ॥
प्रयागादि तीर्थें पदीं नम्र होतां । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ ६ ॥
तुझ्या ज्या पदा पाहतां गोपबाली । सदा रंगली चित्स्वरूपीं मिळाली ॥
करी रासक्रीडा सवें कृष्णनाथा । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ ७ ॥
तुला मागतों मागणें एक द्यावें । करा जोडितों दीन अत्यंत भावें ॥
भवीं मोहनीराज हा तारिं आतां । नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥ ८ ॥

(५) प्रार्थना

ऐसा येइबा । साईदिगंबरा । अक्षयरूप अवतारा । सर्वहि व्यापक तूं ।
श्रुतिसारा । अनुसयाऽत्रिकुमारा । बाबा येइ बा ॥ धृ ॥
काशी स्नान जपा, प्रतिदिवशीं । कोल्हापुर भिक्षेसी ।
निर्मल नदि तुगां, जल प्राशी । निद्रा माहुर देशीं ॥ ऐसा येइबा ॥ १ ॥
झोळी लोंबतसे वाम करीं । त्रिशूल–डुमरु–धारी ।
भक्तां वरद सदा सुखकारी । देशील मुक्ती चारी ॥ ऐसा येइबा ॥ २ ॥
पायी पादुका जपमाळा कमंडलू मृगछाला । धारण करिशी बा नागजटा ।
मुगुट शोभतो माथां ॥ ऐसा येइबा ॥ ३ ॥
तत्पर तुझ्या या जे ध्यानीं । अक्षय त्यांचे सदनी ।
लक्ष्मी वास करी दिनरजनी । रक्षिसि संकट वारुनि ॥ ऐसा येइबा ॥ ४ ॥
यापरि ध्यान तुझें गुरुराया, दृश्य करी नयनां या ।
पूर्णानंदसुखे ही काया । लाविसि हरिगुण गाया । ऐसा येइबा ।
साईदिगंबरा । अक्षयरूप अवतारा । सर्वहि व्यापक तूं ।
श्रुतिसारा । अनुसयाऽत्रिकुमारा । बाबा येइ बा ॥ ५ ॥

(६) श्री साईनाथमहिम्नस्तोत्रम्

(रचना : श्री उपासनी बाबा महाराज)

सदा सत्सवरूपं चिदानंदकंदं, जगत्संभवस्थानसंहारहेतुम् ।
स्वभक्तेच्छया मानुषं दर्शयंतं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ १ ॥
भवध्वांतविध्वंसमार्तंडमीड्यं, मनोवागतीतं मुनिध्यानगम्यम् ।
जगद्व्यापकं निर्मलं निर्गुणं त्वां, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ २ ॥
भवांबोधिमग्नार्दितानां जनानां, स्वपादाश्रितानां स्वभक्तिप्रियाणाम् ।
समुद्धाराणार्थं कलौ संभवंतं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ ३ ॥

सदा निंबवृक्षस्य मूलाधिवासात्सुधास्राविणं तिक्तमप्यप्रियं तम् ।
तरुं कल्पवृक्षाधिकं साधयंतं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ ४ ॥
सदा कल्पवृक्षस्य तस्याधिमूले भवद्भावबुध्या सपर्यादिसेवाम् नृणां
कुर्वतां भुक्तिमुक्तिप्रदं तं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ ५ ॥
अनेकाश्रुतातर्क्यलीलाविलासैः, समाविष्कृतेशानभास्वत्प्रभावम् ।
अहंभावहीनं प्रसन्नात्मभावं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ ६ ॥
सतां विश्रमाराममेवाभिरामं सदा सज्जनैः संस्तुतं सन्नमद्भिः ।
जनामोददं भक्तभद्रप्रदं तं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ ७ ॥
अजन्माद्यमेकं परं ब्रह्म साक्षात्स्वयं संभवं राममेवावतीर्णम् ।
भवद्दर्शनात्संपुनीतः प्रभो ऽहं, नमामीश्वरं सद्गुरुं साईनाथम् ॥ ८ ॥
श्रीसाईशकृपानिधे ऽखिलनृणां सर्वार्थसिद्धिप्रद ।
युष्मत्पादरजः प्रभावमतुलं धातापिवक्ताऽक्षमः ॥
सद्भक्त्या शरणं कृतांजलिपुटः संप्रापितो ऽस्मि
प्रभो श्रीमत्साईपरेशपादकमलान्नान्यच्छरण्यं मम ॥ ९ ॥
साईरूपधरराघवोत्तमं, भक्तकामविबुधद्रुमंप्रभुम् ।
माययोपहतचित्तशुद्धये, चिंतयाम्यहमहर्निशं मुदा ॥ १० ॥
शरत्सुधांशुप्रतिमप्रकाशं, कृपातपत्रं तव साईनाथ ।
त्वदीयपादाब्जसमाश्रितानां स्वच्छायया तापमपाकरोतु ॥ ११ ॥
उपासनादैवतसाईनाथ स्तवैर्मयोपासनिना स्तुतस्त्वम् ।
रमेन्मनो मे तव पादयुग्मे, भृङ्गो यथाब्जे मकरंदलुब्धः ॥ १२ ॥
अनेक जन्मार्जितपापसंक्षयो, भवेद्भवत्पादसरोजदर्शनात् ।
क्षमस्व सर्वानपराधपुंजकान्प्रसीद साईश गुरो दयानिधे ॥ १३ ॥
श्रीसाईनाथचरणामृतपूतचित्तास्तत्पादसेवनरताः सततं च भक्त्या ।
संसारजन्य दुरितौघविनिर्गतास्ते कैवल्यधाम परमं समवाप्तुवन्ति ॥१४॥
स्तोत्रमेतत्पठेद्भक्त्या यो नरस्तन्मनाः सदा ।
सद्गुरुसाईनाथस्य कृपापात्रं भवेद् ध्रुवम् ॥ १५ ॥
साईनाथकृपास्वर्द्रुमसत्पद्यकुसुमावलिः ।
श्रेयसे च मनःशुद्धयै प्रेमसूत्रेण गुंफिता ॥ १६ ॥
गोविंदसूरिपुत्रेण काशीनाथाभिधायिना ।
उपासनीत्युपाख्येन श्रीसाईगुरवे ऽर्पिता ॥ १७ ॥
॥ इति श्रीसाईनाथमहिम्न स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

(७) श्रीगुरुप्रसाद–याचना–दशक

(रचना : श्री ब. व. देव)

रुसो मम प्रियांबिका, मजवरी पिताही रुसो ।
रुसो मम प्रियांगना, प्रियसुतात्मजाही रुसो ॥
रुसो भगिनि बंधूही, श्वशुर सासुबाई रुसो ।
न दत्तगुरु साई मां, मजवरी कधीही रुसो ॥ १ ॥
पुसो न सुनबाई त्या, मज न भ्रातृजाया पुसो ।
पुसो न प्रिय सोयरे, प्रिय सगे न ज्ञाती पुसो ॥
पुसो सुहृद ना सखा, स्वजन ना आप्तबंधू पुसो ।
परी न गुरु साई मां, मजवरी कधीही रुसो ॥ २ ॥
पुसो न अबला मुलें, तरुण वृद्धही ना पुसो ।
पुसो न गुरु धाकुटे, मज न थोर साने पुसो ॥
पुसो नच भलेबुरे, सुजन साधुही ना पुसो ।
परी न गुरु साई मां, मजवरी कधीही रुसो ॥ ३ ॥
रुसो चतुर तत्त्ववित् विबुध प्राज्ञ ज्ञानी रुसो ।
रुसोहि विदुषी स्त्रिया, कुशल पंडिताही रुसो ॥
रुसो महिपती यती भजक तापसीही रुसो ।
न दत्तगुरु साई मां, मजवरी कधीही रुसो ॥ ४ ॥
रुसो कवि ऋषि मुनी अनघ सिद्ध योगी रुसो ।
रुसो हि गृहदेवता नि कुलग्रामदेवी रुसो ॥
रुसो खल पिशाच्चही, मलिन डाकिनीही रुसो ।
न दत्तगुरु साई मां, मजवरी कधीही रुसो ॥ ५ ॥
रुसो मृग खग कृमी, अखिल जीवजंतू रुसो ।
रुसो विटप प्रस्तरा अचल आपगाब्धी रुसो ॥
रुसो ख पवनाग्नि वा अवनि पंचतत्त्वे रुसो ।
न दत्तगुरु साई मां, मजवरी कधीही रुसो ॥ ६ ॥
रुसो विमल किन्नरा अमल यक्षिणीही रुसो ।
रुसो शशि खगादिही, गगनि तारकाही रुसो ॥
रुसो अमरराजही अदय धर्मराजा रुसो ।
न दत्तगुरु साई मां, मजवरी कधीही रुसो ॥ ७ ॥
रुसो मन सरस्वती, चपलचित्त तेही रुसो ।
रुसो वपु दिशाखिला कठिण काल तोही रुसो ॥
रुसो सकल विश्वही मयि तु ब्रह्मगोल रुसो ।
न दत्तगुरु साई मां, मजवरी कधीही रुसो ॥ ८ ॥
विमूढ म्हणुनी हसो, मज न मत्सराही डसो ।
पदाभिरुचि उल्हसो, जननकर्दमी ना फसो ॥
न दुर्ग धृतिचा धसो अशिवभाव मागे खसो ।
प्रपंचि मन हें रुसो, दृढ विरक्ति चित्ती ठसो ॥ ९ ॥
कुणाचीहि घृणा नसो न च स्पृहा कशाची असो ।
सदैव हृदयी वसो, मनसि ध्यानि साई वसो ॥
पदी प्रणय वोरसो, निखिल दृश्य बाबा दिसो ।
न दत्तगुरु साई मां, उपरी याचनेला रुसो ॥ १० ॥

(८) मंत्रपुष्पांजली

हरि ॐ

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने । नमो वयं वै श्रवणाय कुर्महे ।
स मे कामान् कामकामाय मह्यं । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।
कुबेराय वैश्रवणाया महाराजाय नमः ।
ॐ स्वस्ति । साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं
राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्या ईस्यात्
सार्वभौमः सार्वायुष आंतादापरार्धात् ।
पृथिव्यै समुद्रपर्यंताया एकराळिति ।
तदप्येषः श्लोको ऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्या ऽवसन् गृहे ।
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥
श्री नारायण वासुदेवाय सच्चिदानंद सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय

(९) प्रार्थना

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा ।
श्रवणनयनजं वा मानसं वा ऽपराधम् ॥
विहितमविहितं वा सर्वमतेत्क्षमस्व ।
जय जय करुणाब्धे श्री प्रभो साईनाथ ॥ १ ॥
॥ श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

॥ अनंतकोटी ब्रह्मांडनायक राजाधिराज योगिराज परब्रह्म
श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

शेजारती

रात्री १० वाजता

॥ श्री सच्चिदानंद सद्‌गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

(१) आरती

ओवाळूं आरती माझ्या सद्‌गुरुनाथा । माझ्या साईनाथा ॥
पांचाही तत्त्वांचा दीप लाविला आता ॥ धृ ॥
निर्गुणाची स्थिति कैसी आकारा आली । बाबा आकारा आली ॥
सर्वां घटीं भरुनि उरली साई माउली ।
ओवाळूं आरती माझ्या सद्‌गुरुनाथा । माझ्या साईनाथा ॥
पांचाही तत्त्वांचा दीप लाविला आता ॥ १ ॥
रज तम सत्त्व तिघे माया प्रसवली । बाबा माया प्रसवली ॥
मायेचिया पोटीं कैसी माया उद्‌भवली ।
ओवाळूं आरती माझ्या सद्‌गुरुनाथा । माझ्या साईनाथा ॥
पांचाही तत्त्वांचा दीप लाविला आता ॥ २ ॥
सप्तसागरीं कैसा खेळ मांडीला । बाबा खेळ मांडीला ॥
खेळूनियां खेळ अवघा विस्तार केला ।
ओवाळूं आरती माझ्या सद्‌गुरुनाथा । माझ्या साईनाथा ॥
पांचाही तत्त्वांचा दीप लाविला आता ॥ ३ ॥
ब्रह्मांडीची रचना कैसी दाखविली डोळां । बाबा दाखविली डोळां ॥
तुका म्हणे माझा स्वामी कृपाळू भोळा ।
ओवाळूं आरती माझ्या सद्‌गुरुनाथा । माझ्या साईनाथा ॥
पांचाही तत्त्वांचा दीप लाविला आता ॥ ४ ॥

(२) आरती ज्ञानरायाची

आरती ज्ञानराजा महाकैवल्यतेजा । सेविती साधुसंत ।
मनु वेधला माझा ॥ आरती ज्ञानराजा ॥ धृ ॥
लोपलें ज्ञान जगीं । हित नेणती कोणी ॥
अवतार पांडुरंग । नाम ठेविलें ज्ञानी ॥
आरती ज्ञानराजा महाकैवल्यतेजा । सेविती साधुसंत ।
मनु वेधला माझा ॥ आरती ज्ञानराजा ॥ १ ॥
कनकाचे ताट करीं । उभ्या गोपिका नारी ।
नारद तुंबर हो । सामगायन करी ॥
आरती ज्ञानराजा महाकैवल्यतेजा । सेविती साधुसंत ।
मनु वेधला माझा ॥ आरती ज्ञानराजा ॥ २ ॥
प्रगट गुह्यबोले । विश्व ब्रह्मचि केलें ॥
राम जनार्दनीं । पायीं मस्तक ठेविलें ॥
आरती ज्ञानराजा महाकैवल्यतेजा । सेविती साधुसंत ।
मनु वेधला माझा ॥ आरती ज्ञानराजा ॥ ३ ॥

(३) आरती तुकारामाची

आरती तुकारामा । स्वामी सद्‌गुरुधामा ।
सच्चिदानंद मूर्ति । पाय दाखवी आम्हा । आरती तुकारामा ॥ ध्रु ॥
राघवें सागरांत । जैसे पाषाण तारिले ।
तैसे हे तुकोबाचे । अभंग रक्षिले ॥
आरती तुकारामा । स्वामी सद्‌गुरुधामा ।
सच्चिदानंद मूर्ति । पाय दाखवी आम्हा । आरती तुकारामा ॥ १ ॥
तुकितां तुलनेसी । ब्रह्म तुकासी आलें ।
म्हणोनि रामेश्वरें चरणीं मस्तक ठेविलें ॥
आरती तुकारामा । स्वामी सद्‌गुरुधामा ।
सच्चिदानंद मूर्ति । पाय दाखवी आम्हा । आरती तुकारामा ॥ २ ॥

(४) शेजारती

जय जय साईनाथ आतां पहुडावें मंदिरी हो ।
जय जय साईनाथ आतां पहुडावें मंदिरी हो ॥
आळवितों सप्रेम तुजला आरति घेउनि करीं हो ।
जय जय साईनाथ आतां पहुडावें मंदिरी हो ॥ धृ ॥
रंजविसी तूं मधूर बोलूनी माय जशी निज मुला हो ।
रंजविसी तूं मधूर बोलूनी माय जशी निज मुला हो ॥
भोगिसि व्याधी तूंच हरुनियां निजसेवकदुःखाला हो ।
भोगिसि व्याधी तूंच हरुनियां निजसेवकदुःखाला हो ॥
धावुनि भक्तव्यसन हरिसी दर्शन देसी त्याला हो ।
धावुनि भक्तव्यसन हरिसी दर्शन देसी त्याला हो ॥
झाले असतिल कष्ट अतिशय तुमचे या देहाला हो ।
जय जय साईनाथ आतां पहुडावें मंदिरी हो ॥
आळवितो सप्रेम तुजला आरति घेउनि करीं हो ।
जय जय साईनाथ आतां पहुडावें मंदिरी हो ॥ १ ॥
क्षमा शयन सुंदर ही शोभा सुमनशेज त्यावरी हो ।
क्षमा शयन सुंदर ही शोभा सुमनशेज त्यावरी हो ॥
घ्यावी थोडी भक्त जनांची पूजन आदि चाकरी हो ।
घ्यावी थोडी भक्त जनांची पूजन आदि चाकरी हो ॥
ओवाळीतों पंचप्राणज्योति सुमती करीं हो ।
ओवाळीतों पंचप्राणज्योति सुमती करीं हो ॥
शेवा किंकर भक्त प्रीती अत्तर परिमळ वारी हो ।
जय जय साईनाथ आतां पहुडावें मंदिरी हो ॥
आळवितो सप्रेम तुजला आरति घेउनि करीं हो ।
जय जय साईनाथ आतां पहुडावें मंदिरी हो ॥ २ ॥
सोडुनि जाया दुःख वाटतें बाबांच्या च्चरणासी हो ।
सोडुनि जाया दुःख वाटतें साईच्या च्चरणासी हो ॥
आज्ञेस्तव हा आर्शीप्रसाद घेउनि निजसदनासी हो ।
आज्ञेस्तव हा आर्शीप्रसाद घेउनि निजसदनासी हो ॥
जातों आतां येऊं पुनरपि तवच्चरणाचे पाशीं हो ।
जातों आतां येऊं पुनरपि त्वच्चरणाचे पाशीं हो ॥
उठवूं तुजला साईमाउले निजहित साधायासी हो ।
जय जय साईनाथ आतां पहुडावें मंदिरी हो ॥
आळवितो सप्रेम तुजला आरति घेउनि करीं हो ।
जय जय साईनाथ आतां पहुडावें मंदिरी हो ॥ ३ ॥

(५) शेजारती

आतां स्वामी सुखे निद्रा करा अवधुता । बाबा करा साईनाथा ॥
चिन्मय हे सुखधाम जाउनि पहुडा एकांता ॥ धृ ॥
वैराग्याचा कुंचा घेउनि चौक झाडीला । बाबा चौक झाडीला ॥
तयावरी सुप्रेमाचा शिडकावा दिधला ।
आतां स्वामी सुखे निद्रा करा अवधुता । बाबा करा साईनाथा ॥
चिन्मय हे सुखधाम जाउनि पहुडा एकांता ॥ १ ॥
पायघड्या घातल्या सुंदर नवविधा भक्ती । बाबा नवविधा भक्ती ॥
ज्ञानाच्या समया लावुनि उजळल्या ज्योती ।
आतां स्वामी सुखे निद्रा करा अवधुता । बाबा करा साईनाथा ॥
चिन्मय हे सुखधाम जाउनि पहुडा एकांता ॥ २ ॥
भावार्थाचा मंचक हृदयाकाशीं टांगिला । हृदयाकाशीं टांगिला ॥
मनाचीं सुमनें करूनी केलें शेजेला ।
आतां स्वामी सुखे निद्रा करा अवधुता । बाबा करा साईनाथा ॥
चिन्मय हे सुखधाम जाउनि पहुडा एकांता ॥ ३ ॥
द्वैताचें कपाट लावुनि एकत्र केले । बाबा एकत्र केले ॥
दुर्बुद्धीच्या गाठी सोडूनि पडदे सोडीले ।
आतां स्वामी सुखे निद्रा करा अवधुता । बाबा करा साईनाथा ॥
चिन्मय हे सुखधाम जाउनि पहुडा एकांता ॥ ४ ॥
आशा तृष्णा कल्पनेचा सांडुनि गलबला । बाबा सांडुनि गलबला ॥
दया क्षमा शांती दासी उभ्या सेवेला ।
आतां स्वामी सुखे निद्रा करा अवधुता । बाबा करा साईनाथा ॥
चिन्मय हे सुखधाम जाउनि पहुडा एकांता ॥ ५ ॥
आलक्ष्य उन्मनी घेउनी नाजुक दुःशाला । बाबा नाजुक दुःशाला ॥
निरंजने सद्‌गुरु स्वामी निजविलें शेजेला ।
आतां स्वामी सुखे निद्रा करा अवधुता । बाबा करा साईनाथा ॥
चिन्मय हे सुखधाम जाउनि पहुडा एकांता ॥ ६ ॥

॥ सद्‌गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुदेव दत्त ॥

(६) अभंग (प्रसाद मिळण्याकरिता)

पाहे प्रसादाची वाट । द्यावें धुवोनियां ताट ॥
शेष घेऊनी जाईन । तुमचें झालिया भोजन ॥ १ ॥
झालों एकसर्वा । तुम्हा आळवुनीया देवा ॥
शेष घेऊनी जाईन । तुमचें झालिया भोजन ॥ २ ॥
तुका म्हणे चित्त । धरुनि राहिलों निश्चित ॥
शेष घेऊनी जाईन । तुमचें झालिया भोजन ॥ ३ ॥

(७) पद (प्रसाद मिळाल्यानंतर)

पावला प्रसाद आतां विठो निजावें । बाबा आतां निजावें ॥
आपुला तो श्रम कळों येतसे भावें ।
आतां स्वामी सुखें निद्रा करा गोपाळा ॥ बाबा साई दयाळा ॥
पुरले मनोरथ जातों आपुल्या स्थळा ॥ १ ॥
तुम्हासी जागवूं आम्ही आपुल्या चाडा । बाबा आपुल्या चाडा ॥
शुभाशुभ कर्मे दोष हरावया पीडा ।
आतां स्वामी सुखें निद्रा करा गोपाळा ॥ बाबा साई दयाळा ।
पुरले मनोरथ जातों आपुल्या स्थळा ॥ २ ॥
तुका म्हणे दिधलें उच्छिष्टाचें भोजन । उच्छिष्टाचें भोजन ॥
नाही निवडिले आम्हा आपुल्या भिन्न ।
आतां स्वामी सुखें निद्रा करा गोपाळा । बाबा साई दयाळा ॥
पुरले मनोरथ जातों आपुल्या स्थळा ॥ ३ ॥

॥ सद्‌गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥

॥ राजाधिराज योगिराज परब्रह्म साईनाथ महाराज ॥

॥ श्री सच्चिदानंद सद्‌गुरु साईनाथ महाराज की जय ॥